मानव जीवन विकास समिति

वार्षिक प्रतिवेदन

वर्ष 2022-2023

पता– ग्राम बिजौरी, पोस्ट मझगवॉ (बरही रोड) जिला कटनी (म.प्र) पिन कोड 483501

फोन नं. –07626–275223, 275232,

www.mjvs.org mjvs@mjvs.org

अनुक्रमणिका

क्रं	विषय / गतिविधियां ।	पृष्ठ सं.
1	**दो शब्द (राजगोपाल पी.व्ही.)**	03
2	**आभार (निर्भय सिंह)**	04
3	**प्रस्तावना** (परिचय, विजन, मिशन)	05
4	**ट्रेनिंग सेंटर**	06
5	**समिति के 10 स्तम्भ ।**	07
6	**समिति का –** उद्धेश्य, कार्यक्रमों से उम्मीदें, रणनीति।	08
7	**समिति का कार्यक्षेत्र ।**	09
8	**गतिविधियां :**	
	○ प्राकृतिक संसाधन का प्रबंधन	10
	● पर्यावरण का संरक्षण	
	● मृदा और जल प्रबंधन	
	○ वन अधिकार अधिनियम (एफ.आर.ए.)	11
	○ स्थायी कृषि –	12
	● प्राकृतिक खेती, जैविक खेती,	
	● गैरकीटनाशी खेती	
	○ स्वास्थ्य, स्वच्छता, कचरा प्रबंधन	13
	○ स्थानीय कला का विकास	13
	○ ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्थायी आजीविका	14
	○ बाल कल्याण एवं महिला सशक्तिरण	15
	○ अहिंसा प्रोत्साहन,	15
	○ ग्रामीण पर्यटन	15
	○ प्रशिक्षण और कौशल विकास	16
	○ एडवोकेसी,	17
	○ इन्टर्नशिप	17
9	**नवाचार :**	
	▪ आंगनवाड़ी रिनोवेशन कार्य।	18
	▪ जैव उर्वरक एवं जैव कीटनाशी प्रशिक्षण	18
	▪ बीज बैंक की स्थापना।	19
	▪ एनपीएम आधारित कृषि।	19
	▪ ग्रामसभा मोबलाईजेशन।	19
	▪ हर घर तिरंगा अभियान।	20
	▪ बाल अधिकार का प्रचार प्रसार।	20
10	**स्टोरी :**	
	○ बीज बैंक की स्थापना	21
	○ श्री विधि से खेती में उपलब्धि।	22
	○ आधुनिक खेती को बढ़ावा देना।	23
	○ अजोला घास किसानों के लिए वरदान	24
	○ मुर्गी पालन से बदलाव।	25
	○ मछली पालन से बदलाव।	26
	○ मधुमक्खी पालन से बदलाव।	27
	○ आदर्श जैव संसाधन केन्द्र (बीआरसी)	28

क्रं.	विषय / गतिविधियां ।	पृष्ठ सं.
11	**परियोजनांः –**	29
	○ **भारत रूरल लाईलीहुड फाउण्डेशन** (आजीविका आधारित परियोजना)	
	○ **द फोर्ड फाऊण्डेशन** (आजीविका आधारित परियोजना)	
	○ **अजीम प्रेमजी फाऊण्डेशन** (आजीविका आधारित परियोजना)	
	○ **द न्यू वर्ल्ड फाऊण्डेशन** (महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम)	
	○ **मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड** (ग्रामीण पर्यटन विकास कार्यक्रम)	
	○ **द टाइड्स फाऊण्डेशन** (मतदाता जागरूकता कार्यक्रम)	
	○ **एसीसी सीएसआर परियोजना** (स्वावलम्बन और लीसा प्रोग्राम)	
	○ **नाबार्ड** (जैव उर्वरको और जैव कीटनाशकों के निर्माण के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम)	
	○ **देवारण्य प्रोजेक्ट** (जीवन्ती वेलफेयर चेरिटेबल ट्रष्ट)	
	○ **एस.बी.आई. फाऊण्डेशन** (स्वच्छता प्रबंधन के तहत, कचरा गाड़ी)	
	○ **डायट्रेन्डस् ज्वेलरी प्रायवेट लिमिटेड** (जल संरक्षण पर सीएसआर परियोजना)	
	○ **शशी सपोर्ट एसोसिएशन** (शिक्षा सपोर्ट, रिस्क सपोर्ट)	
	○ **चाईल्ड राईट्स अब्जवंटरी** (बाल अधिकारों की सुरक्षा)	
12	**उपलब्धियां ।**	30–31
13	**प्रशस्ति पत्र**	32–33
14	**प्रशंसा पत्र**	34
15	**प्रभाव / भावी योजनाएं ।**	35
16	**फोटो**	36–39
17	**मीडिया कवरेज**	40–43
18	**धन्यवाद्!**	44

दो शब्द

गांव के छोटे किसान, दलित तथा आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक तथा राजनीतिक विकास की दृष्टिकोण से संस्था **मानव जीवन विकास समिति** का वर्ष 2000 में गठन किया गया। विगत बाईस वर्षों में संस्था ने अपने उद्धेश्यों को प्राप्त करने मे सराहनीय कार्य किया है। समाज में वंचितों तथा किसानों में आत्मविश्वास के साथ–साथ क्षमतावृद्धि भी हुई है। आम आदमी को हाशिये से निकालकर मुख्यधारा से जोड़ने के लिए संस्था ने अनवरत प्रयास किया है। मध्यप्रदेश के महाकौशल, बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड के बैगा, गोंड़, कोल जनजाति के लोगों ने तथा दलितों और किसानों ने संस्था के प्रशिक्षण केन्द्र से सामुदायिक नेतृत्व का प्रशिक्षण प्राप्त कर परम्परागत व प्राकृतिक खेती के कौशल का विकास किया है।

निर्भय भाई के नेतृत्व में नौजवान कार्यकर्त्ता साथियों ने अथक परिश्रम किया है, जिसके कारण संस्था अपनी स्थापना के समय से निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है। संस्था के सम्मानित सदस्यों तथा कटनी शहर के पत्रकार साथी, बुद्धिजीवियों एवं समाजिक कार्यो से जुड़े लोगों ने अपने महत्वपूर्ण सुझावों तथा निर्देशों से संस्था को आगे बढ़ाने में भरपूर सहयोग दिया है जिसके लिए मैं उनका हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

डॉ0 राजगोपाल पी0व्ही0
संस्थापक
मानव जीवन विकास समिति

आभार

समिति का रजिस्ट्रेशन होने के बाद अपने सीमित संसाधनों के साथ समिति अपने आसपास के गांवों मे जनजागरण व संगठनात्मक कार्य प्रारम्भ किया। परन्तु इस कार्यकाल के दौरान ग्रामीण विकास प्रतिष्ठान के सहयोग से सतना, डिण्डौरी कांकेर जिले के 5–5 गांवों मे वैकल्पिक कृषि व नर्सरी, वृक्षारोपण आदि कार्यो को बढ़ावा देने काम करते–करते समिति ने अपने काम को कटनी जिले में केन्द्रित करते हुए वर्तमान में महाकौशल क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाया जिसमें वर्तमान में कटनी, दमोह, उमरिया, डिण्डौरी, सिहोर, मण्डला व बालाघाट जिले में सघन रुप से काम कर रही है।

मुझे आज खुशी हो रही है कि समिति अपने बाईस वर्षों के कार्य को अंजाम देते हुये इस मुकाम में पहुंची है कि जो रिपोर्ट आपके हाथ में है उन सभी कार्यो में समिति से जुड़े एक–एक कार्यकर्ता समिति के सम्मानीय सदस्य गणों का भरपूर सहयोग रहा है। समिति को इस पड़ाव तक पहुंचाने में श्री राजगोपाल पी0व्ही0 (श्री राजा जी) का भरपूर आत्मीय आत्मबल प्रदान किया गया है जिनका मै हृदय से आभारी हूँ। समिति को बनाने के बाद उसके उद्धेश्यों के प्रति जो काम करना चाहता था काफी हद तक मै पीछे पन्द्रह–सोलह वर्षो मे देखता हूँ तो आत्मशांति मिलती है। कई लोगों की रोजी रोटी खड़ी हुई, लोग जागृत होकर अपनी समस्याँ हल करवाने लगे। मानव जीवन विकास समिति इस केन्द्र को दुनिया के कई देशों तक अपनी पहचान बनाई है। इस समस्त विरादरी एवं टायपिंग, रिपोर्टिंग और सोशल मीडिया मे प्रचार–प्रसार कार्य में राम किशोर चौधरी तथा हिसाब किताब कार्य में अभय कुमार पटेल, सोनम व पूनम शर्मा और ट्रेनिंग सेंटर व कृषि कार्य मे लगे दयाशंकर यादव और प्रोजेक्ट प्रपोजल राईटिंग मे मदद् कर रहे चन्द्रपाल कुशवाहा और तथा रसोई कार्य मे लगे महेन्द्र कुशवाहा को इसके अलावा परियोजना कार्य को अंजाम दे रहे राधिका तिवारी एवं अलग अलग परियोजनाओं मे काम कर रहे सभी कार्यकर्ता साथीगण का कोटी–कोटी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ ।

निर्भय सिंह
सचिव
मानव जीवन विकास समिति

मानव जीवन विकास समिति

परिचयः मानव जीवन विकास समिति क सामाजिक गैर–सरकारी संगठन है, जिसका गठन वर्ष 2000 में किया गया था। समिति कटनी जिले के बड़वारा तहसील के अन्तर्गत बिजौरी गांव में अपने 30 एकड क्षेत्र में प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना कर संचालित है। समिति के संस्थापक व गॉधीवादी विचारक डॉ. राजगोपाल पी.व्ही. के निर्देशन में समिति अपने दस स्तम्भों (अहिंसक समाज, जनता का शासन, आजीविका आधारित शिक्षा, सामाजिक समानता एवं एकता, स्थानीय कला एवं संस्कृति, स्थायी कृषि, गैर शोषित समाज, सुरक्षित एवं संरक्षित वातावरण, पारस्परिक सहयोग एवं सबका कल्याण) पर विचार–विमर्श कर अपने काम को आगे बढाने में निरन्तर सक्रिय है।

समिति के पास सोसायटी रजिस्ट्रेशन, एनजीओ दर्पण आईडी, पेन, टेन, टीडीएस रजिस्ट्रेशन, 80जी, 12ए, एफसीआरए, सीएसआर, एनसीव्हीटी से रजिस्टर्ड, महिला एवं बाल विकास विभाग से मान्यता प्राप्त है, उक्त सभी आवश्यक दस्तावेज है।

समिति विगत 22 वर्षो में अपने उद्धेश्यों के प्रति सजग रहते हुए सराहनीय कार्य किया है और आगे निरन्तर ग्रामीण क्षेत्रों में काम कर रही है। समिति के ऑफिस स्टॉफ से लेकर फील्ड कार्यकर्ताओं की क्षमतावृद्धि के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में वंचित समुदाय के साथ उनके क्षमतावर्धन हेतु प्रशिक्षणों का आयोजन करना व लोगों की स्थायी आजीविका की ओर अग्रसर है। आम आदमी को मुख्यधारा से जोडने के लिये संस्था ने अनवरत प्रयास किया है।

समिति शिक्षा, स्वास्थ, स्वच्छता, पर्यावरण सुरक्षा, सतत् आजीविका, स्थायी व जैविक कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, ग्रामीण पर्यटन, कौशल विकास प्रशिक्षण, अधिकार आदि पर काम कर रही है। मध्यप्रदेश के 10 जिले, छत्तीसगढ़ के 6 जिले, उड़ीसा के 4 जिले, बिहार के 4 जिले, केरल के 4 जिले, राजस्थान के 3 जिले इस प्रकार से कुल मिलाकर समिति 6 राज्यों के 31 जिले के 364 **गॉवों में सघन** रूप से काम को बढा रही है।

विजन (दृष्टि): हमारी दृष्टि क गरिमामयी जीवन जीने के प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन के लिए समुदाय की क्षमता को बढ़ाकर क सामाजिक रूप से समावेशी समाज का निर्माण करना।

मिशन (लक्ष्य): हमारा लक्ष्य जैविक खेती के माध्यम से एक वैकल्पिक आर्थिक मॉडल के रूप मे अहिंसक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना, प्राकृतिक संसाधनों के इष्टतम प्रबंधन के लि गरीबी उन्मूलन और सामुदायिक आत्मनिर्भरता की ओर नेतृत्व करना।

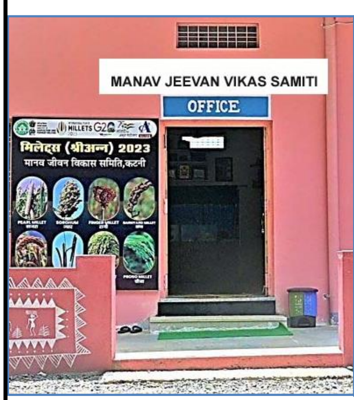

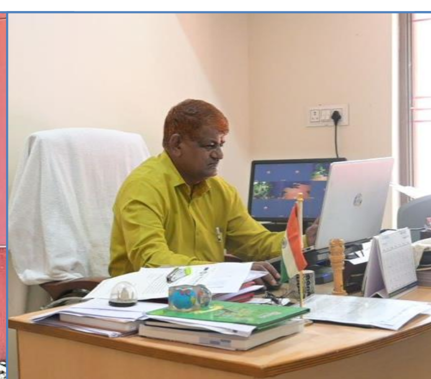

ट्रेनिंग सेन्टर: समिति के पास स्वयं की 30 एकड़ भूमि है जहां पर ट्रेनिंग सेंटर की स्थापना कर अपने काम को आगे बढ़ा रही है। समिति का काय_लिय भी है यहां पर समिति अपने किये गये कामों को हिसाब किताब, लिखा पढ़ी व डाक्यूमेंटेशन का कार्य अपने कार्यकर्ता साथियों की मदद से कर रही है। **मानव जीवन विकास समिति का ट्रेनिंग सेंटर मे** कई प्रकार के डिमास्ट्रेशन भी है जिसे देखने व समझने दूर दूर से लोग आते है। समिति के पास आवश्यकता अनुसार विषय विशेषज्ञ भी उपलब्ध रहते है जिससे प्रशिक्षण कराया जा सकता है।

ट्रेनिंग सेंटर सर्वसुविधा युक्त संसाधनों से भरपूर है। इसके पास स्वयं का आवासीय परिसर उपलब्ध है, साथ ही सोलर बिजली 24 घण्टे उपलब्ध है, पानी की सुविधा है, ग्राऊण्ड है, पर्याप्त पेड़ पौधे होने से स्वच्छ वातावरण है, यातायात सुविधा हेतु सेंटर से 1.5 किलोमीटर मे नेशनल हाईवे एनएच–43 है जहां से कटनी, बरही व शहडोल रोड का कनेक्शन है, इसके अलावा 12 किलोमीटर मे कटनी जंक्शन है से जहां से भोपाल, रीवा, दमोह, सिंगरौली, बिलासपुर आदि रेलवे लाईन का कनेक्शन है, 100 किलोमीटर की दूरी मे जबलपुर (डुमना हवाई अड्डा है जहां से दूरस्थ क्षेत्र मे आने जाने का साधन उपलब्ध है।

ट्रेनिंग सेंटर मे उपलब्ध संसाधन

क्रं.	सुविधाऐं	संख्या	क्षमता	क्रं.	सुविधाऐं	संख्या	क्रं.	सुविधाऐं	संख्या
1.	प्रशिक्षण हाल	1	200	8.	कम्प्यूटर : – डेस्कटॉप लैपटॉप	 8 5	15.	पानीः – बोरबैल्स कुंआ	 1 3
2.	कान्फ्रेंस हाल	1	50	9.	प्रिंटर / स्केनर	6	16.	सौर ऊर्जा	1
3.	गेस्ट रूम	1	10	10.	फोटोकॉपी	1	17.	तालाब	1 (दो एकड़)
4.	डोरमेट्री	3	72	11.	प्रोजेक्टर	1	18.	नर्सरी	1 (तीन एकड़)
5.	कमरे	6	18	12.	कैमरा	1	19.	वृक्षारोपण	1 (पंद्रह एकड़)
6.	भोजन कक्ष	2	100	13.	इंटरनेट	1	20.	कृषि भूमि	1 (सात एकड़)
7.	पुस्तकालय	1	10000	14.	बिजली	1			

समिति के 10 स्तम्भ

1. अहिंसक समाज	परावलम्बी समाज से स्वावलम्बी समाज निर्माण के सिद्धान्त पर चलते हुए प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन पर आधारित अहिंसक समाज रचना में लगे समुदाय का निर्माण करना ताकि भूखमुक्त समाज की रचना हो सके।
2. जनता का शासन	लोक आधारित लोक उम्मीदबार के सिद्धान्त पर लोकनीति के अनुसार चलने के लिए लोगों को खड़ा करना ताकि सही अर्थो में लोकतंत्र की स्थापना की जा सके।
3. आजीविका आधारित शिक्षा	समग्र विकास पर आधारित ज्ञान का प्रचार प्रसार एवं स्कूली बच्चों के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ रोजगारोन्मुखी शिक्षा देना ताकि बेरोजगारी की समस्या का उन्हे सामना न करना पड़े।
4. सामाजिक समानता एवं एकता	गरीबी झेल रहे दीन दुःखी जो अपाहिजों जैसा जीवन जीने के लिऐ विवश हैं। समाज में विद्यमान ऐसे स्त्री पुरूषों के प्रति असमानता और उपेक्षा को दूर कर समानता का दर्जा दिलवा कर शोषण, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार से मुक्त सशक्त सामाजिक ढ़ांचे का निर्माण करना।
5. स्थानीय कला एवं संस्कृति	स्थानीय लोक कला एवं संस्कृति के कलाकारों को संगठित कर पुनर्जीवित करना उनका संवर्धन एवं संरक्षण कर वातावरण उपलब्ध करवाना।
6. स्थायी कृषि	लम्बे समय तक भूमि की उत्पादन क्षमता बनाये रखने वाली जैविक खेती को प्रोत्साहन देकर पारम्परिक ढ़ग से खेती कर रहे किसानों का उत्साह बढ़ाना ताकि वे कृषि की नीति का विकास कर सके।
7. गैर शोषित समाज	अखण्डता, सम्प्रभुता, सम्भाव, परस्पर भाईचारे के साथ–साथ एकता, समानता, सामूहिकता एवं न्याय पर आधारित समाज जिसमें ऊंच–नीच, अगल़े–पिछड़े जाति आधारित भेदभाव न हो।
8. सुरक्षित एवं संरक्षित वातावरण	स्वच्छ व स्वस्थ वातावरण का निर्माण करना जहाँ हिंसा, लूटपाट, वैमनस्यता, दुराचार तथा तेरे मेरे लिए कोई स्थान न हो।
9. पारस्परिक सहयोग	परस्पर सहयोग की भावना को पुनर्जीवित कर एक दूसरे की सहायता व मित्रता को बढ़ावा देना ताकि पूरा गांव और समाज अपनी समस्याऐं आपसी सहयोग व मित्रता के आधार पर सुलझा सकें।
10. सबका कल्याण	उपरोक्त विचारों के क्रियान्वयन के लिऐ तथा समाज कल्याण के काम का विकास करने में संस्था एक मजबूत आधार स्तम्भ है।

समिति का उद्धेश्य

- प्राकृतिक खेती व जैविक खेती और गैर कीटनासी खेती का प्रबंधन एवं सम्बर्द्धन कार्य को बढ़ावा देना।
- वन अधिकार अधिनियम, वनवासियों की आजीविका, समृद्धि एवं सम्मान की रक्षा के लिए प्रयास करना।
- वनवासियों को वन/वनोपज पर उचित अधिकार दिलवाना एवं संघर्ष कर रचनात्मक कार्य करना।
- विस्थापितों को न्यायपूर्ण अधिकार दिलाने के लिए शान्ति और अहिंसा का मार्ग प्रशस्त करना।
- सामाजिक कल्याण तथा अन्याय एवं शोषण के विरूद्ध लोक चेतना जागृत करना।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास के अनुरूप परिवेश की रचना के लिए प्रयास करना।
- जल संरक्षण, मृदा संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के कार्य को बढ़ावा देना।
- पर्यावरण को स्वस्थ एवं प्रदूषण मुक्त करने के प्रयासों को बढ़ावा देना।
- सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने लोगों को जागरूकता करना।
- महिलाओं को सम्मान तथा अधिकार दिलाने के लिए कार्य करना।
- विज्ञान, शिक्षा, साहित्य तथा ललित कलाओं का विकास करना।
- पारंपरिक बीज संरक्षण को बढ़ावा देना।
- ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना।

कार्यक्रमों की उम्मीदें

- पर्यावरण सुरक्षा एवं किसानों को जैविक खेती करने बढ़ावा मिलेगा।
- हिंसा मुक्त समाज निर्माण तथा नशामुक्ति के खिलाफ माहौल निर्मित होगा।
- पंचायतीराज की समझ तथा महिलाओं मे सशक्तिकरण व क्षमतावर्द्धन का विकास।
- शासकीय योजनाओं की जानकारी व क्रियान्वयन एवं युवाओं मे जागरूकता आयेगी।
- शिक्षा स्तर तथा स्वावलम्बन प्रक्रिया मे बढ़ावा एवं आदिवासी क्षेत्रों मे जागरण का संकेत।
- गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को बढ़ावा मिलेगा तथा स्वरोजगार स्थापित होंगे, पलायन रूकेगा।
- जल, जंगल और जमीन सुरक्षित होगी तथा लोगों की स्थायी आजीविका का मॉडल निर्माण।
- जल स्तर बढ़ाने तालाब, डेम, चैक डेम व छोटे छोटे जल संरचनाऐं बनाने से वाटर लेवल बढ़ेगा।

रणनीति

- मूलभूत सुविधाओं जैसे पेय जल, आवास, बिजली, शिक्षा पर बल देना।
- सामाजिक कुरीतियों को समझाने लोकगीत, नाटक प्रदर्शन आदि के माध्यमों से समझाना।
- वन अधिकार के तहत लोगों को वन भूमि मे काबिजों का अधिकार पत्र व कब्जा दिलाना।
- पंचायत जनप्रतिनिधियों व जागरूक मंच का अधिकारों के प्रति निरन्तर क्षमतावर्द्धन करना।
- मीडिया व अधिकारियों के साथ संवाद करना ताकि जानकारी का अदान–प्रदान होता रहे।
- कार्यकर्ताओं द्वारा गांव गांव मे संगठन वं स्वसहायता समूहों का निर्माण करना वं संचालन।
- जन जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, बैठक व छोटे छोटे नुक्कड़ सभों आयोजित करना।
- योजनाओं का विकेन्द्रीकरण मे मदद एवं शासकीय विभागों से तालमेल बैठाना व काम कराना।
- स्कूलों मे वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कर बच्चों मे शिक्षा के प्रति जागरूकता लाना।

समिति का भौगोलिक कार्यक्षेत्र

मध्यप्रदेश	1 कटनी	2 जबलपुर	3 उमरिया	4 डिण्डौरी	5 दमोह	6 सिहोर	7 सतना
	8 सीधी	9 सिवनी	10 विदिशा				
छत्तीसगढ़	11 कांकेर	12 रायपुर	13 महासमुंद	14 सरगुजा	15 अम्बिकापुर	16 कोरबा	
उड़ीसा	17 कालाहण्डी	18 भुवनेश्वर	19 नयागढ़	20 रायगढ़ा			
बिहार	21 पटना	22 जमुई	23 मुजफ्फरपुर	24 जहानाबाद			
केरल	25 कानपुर	26 कोजीकोड	27 वायनाड	28 अलप्पुझा			
राजस्थान	29 जोधपुर	30 उदयपुर	31 जयपुर				

समिति के विषयगत कार्यक्षेत्र

गतिविधियां

प्राकृतिक संसाधन का प्रबंधन

वे संसाधन जो उपयोगी हो या फिर मनुष्य को अपनी जरूरतों को पूरी करने हेतु उपयोगी बनाये जा सकते हैं। संसाधन के परोक्ष रूप से उपयोग करने हेतु, उपलब्ध हो, प्राकृतिक संसाधन हैं। प्राकृतिक संसाधनों के उदाहरण, शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, मृदा, वन, खनिज, वर्षा, झीलों, नदियों और कुओं द्वारा मृदा, भूमि, वन, जैवविविधता, खनिज, जीवाश्मीय ईंधन इत्यादि शामिल हैं। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधन हमें पर्यावरण से प्राप्त होते हैं। बढ़ती जनसंख्या और आर्थिक प्रक्रियाओं के चलते अत्यधिक मात्रा में पदार्थों का उपयोग करने के कारण प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर भारी बोझ पड़ता है और इस कारण पर्यावरण गंभीर रूप से नष्ट होता जा रहा है। प्राकृतिक संसाधन को बनाये रखने के लिए समिति व संगठनकर्ता पर्यावरण के अवसर पर अधिकांश मात्रा मे वृक्षारोपण करते है, वर्षा का जल बेकार न बह जाये इसके लिए छोटे छोटे जल संरचनायें बना रहे है।

पर्यावरण संरक्षण एवं संवंर्धनः- पर्यावरण के संरक्षण, संवर्धन और विकास का लिया संकल्प, पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें सर्वप्रथम इस धरती को प्रदूषण रहित करना होगा। जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रदूषण भी बढ़ता ही जा रहा है, जिसे नियंत्रण में लाना आवश्यक है तभी हमारे पर्यावरण का संरक्षण हो पाएगा। मनुष्य दिन प्रतिदिन प्रगति करता जा रहा है और इस विकास के नाम पर प्रदूषण वृद्धि करता जा रहा है। पर्यावरण अर्थात् जिस वातावरण में हम रहते हैं। हमारे आस पास मौजूद हर एक चीज, जीव.जंतु, पक्षी, पेड़.पौधे, व्यक्ति इत्यादि सभी से मिलकर पर्यावरण की रचना होती है। हमारा इस पर्यावरण से घनिष्ठ संबंध है और हमेशा रहेगा। प्रकृति और पर्यावरण की अद्भुत सुंदरता देखते ही हृदय में खुशी और उत्साह का संचार होने लगता है। पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखने के लिए लोगों को निःशुल्क पौधे वितरण कर घर के आसपास, खेतों व सार्वजनिक जगहों मे पौधा लगवाया जा रहा है।

मृदा और जल प्रबंधन : भूमि प्रबंधन और जल प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके बिना खेती संभव नही है। कृषि योग्य भूमि मे जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्तमान मे देखा जाये तो अधिकांश मात्रा मे भूमि का दोहन हो रहा है, भूमि पर से पेड़ो को लगाने की बजाय काटा जा रहा है। पेड़ कटने से बारिस का पानी तेजी से गिरने के कारण मिट्टी का कटाव ज्यादा होता है जिससे भूमि की उर्वरता नष्ट होती है। बारिस का पानी रोकने के लिए मेढ़बंदी, तालाब, डेम, चैक डेम, कंटूर निर्माण, वृक्षारोपण कराकर मिट्टी के कटाव को रोका जा रहा है। समिति अपने कार्यकर्ताओं की मदद से फील्ड मे गांव गांव जाकर किसानों के भूमि मे बरसात के मौसम मे अधिक से अधिक वृक्षारोपण करा रही है।

मृदा और जल संरक्षण

- पौधा रोपण 425
- बोरी बंधान 17
- मेढ़ बंधान 283
- कुंआ निर्माण 52
- सामुदायिक तालाब 15
- चैक डेम /स्टाप डेम 9
- खेत तालाब 25

वन अधिकार अधिनियम (एफ.आर.ए.)

एफ. आर. ए.

- वन अधिकार अधिनियम
- वन अधिकार कानून की जानकारी व जागरूकता
- वन एप मित्र पोर्टल मे आवेदन कराना एवं फॉलोअप करना।
- दावा आपत्ति का फार्म भरवाना एवं फॉलोअप करना।
- वन अधिकार पत्र दिलाने मे मदद करना।
- वन अधिकार के तहत पट्टा दिलाने मे मदद करना।

वन अधिकार कानून 2006 के प्रति लोगों को बैठक व शिविर के माध्यम से जागरूक करना।	**180**
वन अधिकार अधिनियम के तहत अधिकार पत्र मांग को लेकर ज्ञापन देना	**8**
वन अधिकार को लेकर ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तरीय संवाद	**6**
वन अधिकार अधिनियम के तहत प्राप्त पटटे	**2**

वन अधिकार कानून 2006 के प्रति लोगों को बैठक व शिविर के माध्यम से जागरूक किया गया ताकि वन क्षेत्र मे काबिज हितग्राहियों को पट्टा प्राप्त हो सके। वन अधिकार कानून 2006 के तहत लोगों के काबिज भूमि का वन प मित्र के माध्यम से लोगों के आवेदन भरवाये गये ताकि पात्र हितग्राही को हकदारी मिल सके। वन अधिकार के तहत वन प मित्र से प्राप्त आवेदनों के माध्यम से लोगों को काबिज भूमि का पट्टा मिला है। इस कानून के तहत अधिक से अधिक लोगों के दावा आपत्ति के फार्म भरवाये गये है, इसके बाद सम्बंधित पटवारी, आरआई व तहसीलदार से संवाद व पत्राचार भी कराया गया है जिसके माध्यम से आवेदनों की छानबीन कर वास्तविक पात्र हितग्राही को काबिज भूमि का पट्टा व अधिकार पत्र दिलाया गया है।

स्थायी कृषि

प्राकृतिक खेती | जैविक खेती | गैर कीटनाशी प्रबंधन खेती

जैव पोषक तत्व प्रबंधन | **जैव कीटनाशी प्रबंधन**

सभी को स्थायी कृषि अपनाना होगा इस परिपेक्ष्य मे किसानों को जागरूक किया गया है। समिति अपने तरीके से कार्यक्षेत्र के गांव मे कार्यकर्ताओं की मदद से किसानो को जैविक खेती करने प्रोत्साहित कर रही है। **खेती मे गोबर खाद, केचुआ खाद, कम्पोस्ट खाद, वर्मीकम्पोस्ट खाद के अलावा जैव पोषक तत्व मे नाडेप खाद, भूनाडेप खाद, मटका खाद, हरी खाद और घन जीवामृत का उपयोग करते हैं। जैव कीट प्रबंधन के तहत गौ–मूत्र, नीम अस्त्र, मठास्त, दसपर्णी, हींगास्त्र, तुलास्त्र, पंचगब्य** और लमित का उपयोग करना बताते और सिखाते है। पौधो को पोषक तत्व प्रदान करने के लि अलग अलग फसलों के लि अलग अलग पोषक तत्व की आवश्यकता होती है जिसे जैविक तरीके से निर्माण कर किसान उपयोग कर रहे है जैसे राइजोबियम, ऐजेक्टोबेक्टर, ट्राइकोडरमा का उपयोग करते है। इससे उत्पादकता मे लगातार वृद्धि हो रही है और जैविक खेती करने वालों की संख्या भी बढ़ रही है।

स्थायी कृषि को बढ़ावा देने के लि हम पानी, जंगल, भूमि, पशुधन, पारंपरिक बीज, आधुनिक कृषि तकनीक, गैर कीटनाशक प्रबंधक शामिल है।

प्राकृतिक खेती से तात्पर्य है कि प्रकृति ने जो कुछ भी हमे दिया है उसी से प्राप्त संसाधानों के उपयोग से अपनी खेती को बढ़ाने का काम करेंगे। हम बाजार पर निर्भर नही होते है। 6000 किसान लाभान्वित हो रहे है।	**जैविक खेती** से तात्पर्य है हम जैविक खाद, बीज और दवाईयों का उपयोग कर खेती करते है परन्तु अपने पास ये संसाधन उपलब्ध न होने पर बाजार से खरीदकर भी उपयोग कर लेते है लेकिन जैविक ही हो। 7500 किसान लाभान्वित हो रहे है।	**गैर कीटनाशी प्रबंधन खेती** से आशय है इस प्रकार की खेती मे पेस्टिसाईड पूर्णतः प्रतिबंधित रहता है लेकिन रासायनिक खाद का उपयोग कर सकते है। 6869 किसान लाभान्वित हो रहे है।

स्वास्थ्य, स्वच्छता और कचरा प्रबंधन

स्वास्थ्य प्रबंधन :— स्वास्थ्य के क्षेत्र मे देखा जाये तो गांव गांव मे समिति कार्यकर्ता आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका, आशा कार्यकर्ता, महिला जनप्रतिनिधियों की मदद से कुपोषित बच्चे को एनआरसी मे भर्ती कराना, पोषण आहार दिलाना, किशोरी बालिका, गर्भवती व धात्री महिलाओं की आवश्यक जांच व उपचार कराने सलाह दी जाती है एवं गंभीर बीमार व्यक्ति की ईलाज कराने 75 परिवार को आवश्यक स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। इसके अलावा बच्चों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाया गया है।

स्वच्छता प्रबंधन :— दैनिक जीवन में साफ सफाई अति आवश्यक है। गांव की गलियो, वार्डो मे साफ सफाई कर स्वच्छता का परिचय दिया जा रहा है। कचरा इकट्ठे करने एवं कचरे से फायदे व हानि को भी बताया गया। हमारे आसपास अन्यत्र जगह कचरा जमा होने से गंदगी के कारण जहरीले मच्छर पनपते है जिसके काटने से बीमारी होती है इससे बचने के लिए 160 सोखता गड्ढे बनवाकर सही निपटान करने जागरूक किया गया।

कचरा प्रबंधन :— हमारे पर्यावरण के आसपास कचरा जमा न होने दे बल्कि इसे एक जगह इकट्ठे कर कचरादान मे डाले। इसके प्रबंधन के लिए गांव मे तिराहे, चौराहे पर कचरादान बनाया गया है और कस्वा व शहर मे 160 कचरादान के अलावा कचरा फेंकने के लए गाड़ी की व्यवस्था भी की गई है। कचरा को खाद मे परिवर्तन कर फसल उत्पादन मे उपयोग करने किसानों को जागरूक किया जा रहा है।

स्थानीय कला का विकास

स्थानीय कला वास्तव मे विलुप्त होता चला जा रहा है ऐसे मे आने वाले समय मे स्थानीय कला का नामों निशान मिट जायेगा। समिति अपने स्तर पर स्थानीय कलां को बचाये रखने एवं विकास करने मे मदद कर रही है। इसमे मुख्य रूप से बांस, मिट्टी, लकड़ी के कलात्मक वस्तुओं का निर्माण कर उद्यम विकास कार्यक्रम को बढ़ावा दे रहे है। **मिट्टी के बर्तन बनाना 41 उद्यमी, बांस की वस्तुऐं बनाना 32 उद्यमी, लकड़ी की वस्तु बनाना 22 उद्यमी शामिल है।** ऐसे कलाकारों को समिति के माध्यम से प्रतिभाशाली कलाकारों का ट्रेनिंग दिया जाता है इनके द्वारा उत्पादित वस्तु का बाजार उपलब्ध कराकर उचित पारिश्रमिक दिलाये जाने कार्य किया जा रहा है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्थायी आजीविका

मानव जीवन विकास समिति द्वारा सतत् व स्थायी आजीविका कार्यक्रम परियोजनाओं की मदद से ग्रामीण क्षेत्र मे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुधारने स्थायी आजीविका सुनिश्चित अनवरत प्रयासरत है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था (रूरल इकोनॉमी) प्रदेश व प्रदेश के बाहर जहॉं भी लोग अपने गॉव की अर्थव्यवस्था को ठीक करना चाहते हैं या आगे बढ़ाना चाहते हैं तो उस गॉव में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन, पानी, जमीन और वनोपज का संकलन जैसे कार्यों को प्राथमिकता के साथ करना ऐसे कार्यक्रमों को आगे बढाने के लिये कार्यक्रम तय करना ग्रामीाण अर्थव्यवस्था के तहत काम किये जा रहे है। जिसमें जैविक खेती को बढाना, महिलाओं के द्वारा सब्जी उत्पादन को बढाना वनोपज का संकलन वं मार्केटिंग, सिंचाई सुविधा के साथ खेती में उत्पादन बढाकर अपने भरण पोषण के लिये अनाज उत्पादन करना।

स्थायी आजीविका की बात करें तो चाहे खेती हो या स्वरोजगार दोनों शामिल है। खेती कर रहे किसानों को अपनी स्वयं की जमीन को भूमि समतलीकरण कर खेती लायक बनाना, सिंचाई हेतु पानी की सुविधा उपलब्ध कराना, प्राकृतिक खेती की ओर मोड़ना जिससे अपने पास प्राप्त संसाधनों से ही अच्छी खेती से उपज लिया जा सके। खेती को बढ़ावा देने के लि खेती की लागत करने पर भी काम किया जा रहा है। खेतीहर किसानों को जैविक खाद बनाना और जैव कीटनासी दवाईयां बनवाकर खेती मे उपयोग करने प्रेरित किया जा रहा है। मुख्यतः व्यावसायिक खेती और व्यावसायिक सब्जी उत्पादन, मुर्गीपालन, बकरीपालन, मछलीपालन, हस्तकला शिल्प तथा व्यावसाय स्थापित कर आजीविका सुनिश्चत करना समिति लगातार प्रयासरत है।

बाल कल्याण एवं महिला सशक्तिरण

शिक्षा का प्रचार प्रसार : समिति अपने कार्यकर्ता साथी के साथ फील्ड के गांव मे शिक्षा स्तर को बढ़ावा देने के लिए बच्चों का शाला प्रवेश कराना, ड्रापआउट बच्चों का शाला प्रवेश कराना, उच्च शिक्षा के लि प्रोत्साहन देना, कम्प्यूटर शिक्षा को बढ़ावा देना आदि कार्य समिति कर रही है। इसके लि बैठक करना, जागरूकता रैली का आयोजन करना, दिवाल लेखन करना, पोस्टर व पम्पलेट के माध्यम से जागरूक करना, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2010 के तहत बच्चों का प्रवेश दिलाना। अधिकतर वंचित समुदाय के बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं।

बाल कल्याण, मानव जीवन विकास समिति ने कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक की **10 आंगनवाड़ी केन्द्र मझगवां, बिजौरी, पोड़ी, बड़वारा–1, बड़वारा–2, बिलायतकलां, पथवारी, भदौरा, बंदरी और जमुनिया** को समिति रंग रोदन कर बच्चों को बैठने हेतु कुर्सी, पढ़ने, लिखने हेतु टेबल और सीखने हेतु खिलौने आदि केन्द्र को सौपे गये है। आंगनवाड़ी केन्द्रो का पूर्व की अपेक्षा वर्तमान मे तुलना की जाये तो केन्द्र मे पढ़ने वाले बच्चों की उपस्थिति मे 15 से 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

महिला सशक्तिकरण की बात करें तो गांव स्तरीय किशोरी ग्रुप, महिला ग्रुप, स्व–सहायता समूह, महिला जनप्रतिनिधियों का ग्रुप सभी का समय समय पर क्षमतावर्द्धन कराया जाता है। आंगनवाड़ी केन्द्रों की मदद से केन्द्र मे होने वाली बैठको मे भागीदारी करके महिलाओं को सशक्त करने का काम किया जा रहा है।

अहिंसा प्रोत्साहन

मानव जीवन विकास समिति अपने उद्देश्यों के अनुरूप समाज व देश में अहिंसा को बढावा देने के लिए कई प्रकार की गतिविधियां संचालित करती हैं, जिसके अंतर्गत युवाओं में अहिंसा की शिक्षा के सैद्धांतिक और व्यावहारिक समझ विकसित किया जाता है। इसके लिए गांधीवादी विचारधारा को अपनाने व उनके बताये मार्ग पर चलने के लिए लोगों को अधिकांशतः प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह की आगे आने वाले समय मे विकास का मार्ग प्रसस्त होगा। शैक्षणिक संस्थानों मे अहिंसात्मक शिक्षा को प्रोत्साहन व बढ़ावा मिलेगा। इससे एकता, समानता, सामूहिकता, सौह्मर्द की भावना का विकास होगा।

ग्रामीण पर्यटन

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड के सहयोग से कटनी, उमरिया, दमोह, सिहोर, डिण्डौरी जिले के 7 गांव मे होमस्टे डेवलप कराने समिति कार्य कर रही है। आगे आने वाले समय मे पर्यटन भ्रमण कर रहे पर्यटक और इच्छुक व्यक्ति होमस्टे मे रूक सकेंगे।

''प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम''

कौशल विकास को हम समझे तो इसका मतलब यह हुआ की इसमे हमें ना सिर्फ किताबी ज्ञान मिलता है, बल्कि कुछ नया करने का हुनर भी मिलता है। जो आगे चलकर रोजगार का साधन बनता है। इसके हम गांव गांव सर्वे कराकर देखते है कि`से कितने युवक, युवतिया और महिला, पुरूष व समूह, संगठन है जिन्हें कुछ नया करने का विचार हो रहा है।`से आवश्यकता वाले व्यक्तियों को प्रशिक्षण के माध्यम से क्षमतावर्द्धन कराया जाता है ताकि कुछ नया करने का हुनर सीख जाये। समिति अपने परियोजनाओं की मदद से स्वयं सहायता समूह का प्रशिक्षण, ग्राम विकास संगठन का प्रशिक्षण, किसानों का प्रशिक्षण, किसानों का क्सपोजर विजिट, सरकारी योजनाओं का प्रशिक्षण, बकरी पालन प्रशिक्षण, मुर्गी पालन प्रशिक्षण, मछली पालन प्रशिक्षण, मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण स्थानीय लोगों को दिया जाता हैं। इस प्रशिक्षण से प्रशिक्षित होकर अधिकतर लोगों ने स्वयं का रोजगार भी स्थापित कर लिया है। परिवार की आर्थिक स्थिति मे सुधार हुआ है। परिवार की वार्षिक आमदनी मे लगभग 20 से 30 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी भी हुई है। इस प्रशिक्षण के माध्यम से लोगों के जीवन मे परिवर्तन देखने को मिला है।

कुल स्वयं सहायता समुह	कुल ग्राम विकास संगठन	कुल किसान उत्पादक संगठन
581	135	सदस्य 4000

SHG का क्षमता निर्माण 182

ग्राम विकास संगठन का क्षमता निर्माण 135

किसानो का प्रशिक्षण 730

कार्यकर्ताओं का क्षमता निर्माण 36

किसानो का एक्सपोजर 5

सरकारी योजनाओं पर प्रशिक्षण 68

बकरी पालन प्रशिक्षण 5

मुर्गी पालन प्रशिक्षण 5

मछली पालन प्रशिक्षण 5

मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण 5

एडवोकेसी

मानव जीवन विकास समिति अपनी परियोजना आधारित गतिविधियां का संचालन तो कर ही रहा है इसके साथ ही साथ समस्या का समाधान न होने पर गांव के लोगों के साथ प्रशासन स्तर पर शान्तिपूर्ण तरीके से डवोकेसी का भी काम करते है। समस्याओं से सम्बंधित प्रशासन को पत्राचार कराना, ज्ञापन दिलाना और मपी आनलाईन पोर्टल पर आनलाईन आवेदन करवाने मे मदद करना। वन अधिकार अधिनियम (फआरद्ध के तहत वन प मित्र पोर्टल पर आनलाईन आवेदन कराया गया ताकि पूर्व मे दिये गये आवेदन व दावे को निरस्त होने की स्थिति मे पुनः वन प मित्र पोर्टल मे आवेदन कराया गया। पंचायतों मे ग्रामसभा के माध्यम से आवेदनों के निराकरण कराने मे हितग्राहियों द्वारा प्रस्ताव पास कराकर ब्लॉक व जिले स्तर मे कार्यवाही कराकर समस्या निराकरण कराने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाया गया। वन अधिकार कानून के सफल क्रियान्वयन मे तहसीलदार व सडीम और कलेक्टर को समय समय पर अवगत कराया जाता है। पंचायत, ब्लॉक और जिला स्तरीय प्रशासन के साथ डवोकेसी मीटिंग का भी आयोजन करते है जिससे प्रशासन को भी पता रहे की गांव की किस प्रकार की समस्या है और इसे समाधान भी करना है। गांव के लोग और प्रशासन के साथ इंटरफेस मीटिंग का आयोजन भी कराते है ताकि सम्बंधित विभाग अपने विभागीय स्तर पर समस्या का समाधान कर सके।

इन्टर्नशिप

मानव जीवन विकास समिति के पास स्वयं का ऑफिस, लाईब्रेरी, ट्रेनिंग सेंटर, नर्सरी व खेती की जमीन है जहां पर विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन स्थापित है, जिसे देखने व समझने दूर–दूर से लोग आते है। विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय से छात्र इंटरर्नशिप करने के लि आते है। समिति के पास बेहतर स्टॉफ के साथ विषय विशेषज्ञ की उपलब्धता है। नर्सरी प्रबंधन, प्राकृतिक खेती, डिजिटल मार्केटिंग, कौशल विकास, स्वरोजगार के अवसर प्राप्त करना आदि विषय के छात्र, युवा वं किसान समिति के ट्रेनिंग सेंटर मे आकर इंटर्नशिप करते चले आ रहे है। **इंटरर्नशिप के लिए प्रतिवर्ष 50 से 100 प्रशिक्षणार्थी आते है।**

"नवाचार"

- **आंगनवाड़ी रिनोवेशन कार्य :** मानव जीवन विकास समिति कटनी जिले के बड़वारा विकासखण्ड अन्तर्गत 10 आंगनवाड़ी केन्द्रों को महिला एवं बाल विकास विभाग की सहमती से गोद लेकर बच्चों की स्कूल पूर्व शिक्षा के तहत पढ़ाई लिखाई पर ध्यान तो देने के साथ साथ बच्चों के पोषण आदि पर भी ध्यान दिया जाता रहा है। आंगनवाड़ी केन्द्रों मे बच्चों की उपस्थिति बढ़े इसके लिए समिति ने नवाचार किया कार्यक्षेत्र की 10 आंगनवाड़ी केन्द्रों मे रंगाई, पुताई और चलचित्र बनाकर आकर्षण का केन्द्र बनाया और साथ ही बच्चों के बैठने के लिए कुर्सी, लिखने की सुविधा अनुसार टेबिल, पढ़ने के लिए आवश्यक सामग्री एवं चार्ट पेपर भी केन्द्रों मे उपलब्ध कराया गया है जिसके कारण पता चला है कि सभी केन्द्रो मे बच्चों की उपस्थिति बढ़ी है।

- **जैव उर्वरक और जैव कीटनाशक तैयार करने एसएचजी सदस्यों का 15 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजन की पहल -**

मानव जीवन विकास समिति ने नाबार्ड और एनआरएलएम के सहयोग से प्रशिक्षण का प्रदर्शन किया। राधा.कृष्ण और गणेश समूह के लगभग 30 सदस्य ने सहभागिता की। जैव उर्वरक और जैव कीटनाशक जिसमें 10 अलग. अलग प्रकार के जैव कीटनाशक नीमास्त्र, अग्निअस्त्र, ब्रम्हास्त्र, दशपर्णी, मठास्त्र, फूलवर्धक, हींगस्त्र, जीवामृत, तुलास्त्र, वर्मीवॉश और 4 अलग.अलग प्रकार के जैव उर्वरक कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट, घनजीवामृत, सुपर.कम्पोस्ट, नाडेप.खाद। समूह के सदस्य इस गतिविधि से प्रति माह 1500 रुपये से 2000 रुपये तक कमा रहे हैं। सदस्यों को आय का स्रोत लोग सब्जियों की खेती में वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग कर रहे हैं सब्जियों की जैविक खेती जो कम लागत वाली है और पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए अच्छी है।

- **बीज बैंक की स्थापना** : मानव जीवन विकास समिति भारत रूरल फाउण्डेशन दिल्ली की मदद से दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक मे **40 बीज बैंक की स्थापना** कर जैविक बीज, खाद और जैविक दवाईयों का स्टोरेज किया है जिससे किसानों को प्रशिक्षण देकर जैविक खेती का काम शुरू किया है। इससे उत्पादकता तो बढ़ रही है साथ ही साथ रासायनिक युक्त खाद बीज का उपयोग करने से लोगों मे अनेको अनेक बीमारी का सामना करना पड़ रहा था बच्चों मे कुपोषण भी इसी वजह से बढ़ रहा था अब उसे भी रोका जा रहा है।

- **एनपीएम आधारित खेती को बढ़ावा** : कार्यक्षेत्र के **25000 किसानों** के लिए एक वरदान है गैर कीटनाशी खेती। जैविक खाद, कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट खाद वं कीटनाशक दवा के छिड़काव व उत्पादित अनाज से लोगों मे साईड इफेक्ट नही होता है साथ ही सभी किसान अपने आस पास से उत्पादित वनस्पति से ही कीटनाशक तैयार कर अच्छी उत्पादन ले रहे है, इससे रासायनिक दवाईयों मे खर्चा नही होता है इससे साबित होता है कि यह पद्धति खेती के लिए अच्छी है।

- **ग्रामसभा मोबलाईजेशन** : ग्रामसभा पंचायतीराज का सबसे पावरफुल सत्ता माना गया है, ग्रामसभा द्वारा पारित प्रस्ताव कभी भी निरस्त नही होता है। वर्ष मे 4 ग्रामसभा लगाना अनिवार्य है इसके अलावा विशेष ग्रामसभा आयोजित की जा सकती है। ग्रामसभा मे महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने लोगों को जागरूक किया गया ग्रामसभा मे महिला सुरक्षा के मुद्दे जोड़ा जाये इसके लिए महिलाओं को ग्रामसभा मे जाना जरूरी है। **कार्यक्षेत्र के 80 गांव मे जागरूकता कार्यक्रम** के माध्यम से ग्रामसभा को मजबूत किया गया।

- **हर घर तिरंगा अभियान 2022** आजादी का अमृत महोत्सव, मानव जीवन विकास समिति जिला कटनी द्वारा बड़वारा ब्लाक की 21 **पंचायत के** 50 **गांवों** मे निर्भय सिंह मानव जीवन विकास समिति सचिव की अगुवाई मे कार्यक्रम समन्वयक राम किशोर चौधरी, कार्यकर्ता साथी के सहयोग से आजादी का अमृत महोत्सव मनाने हर घर तिरंगा अभियान का आयोजन कर गांव गांव मे प्रचार प्रसार किया गया। समिति अपने कार्यकर्ताओं की मदद से विभिन्न गतिविधियां जैसे बैठक करना, दिवाल लेखन व रैली निकालकर हर घर तिरंगा अभियान का संदेश बताएं। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि प्रगतिशील स्वतंत्र भारत के 75 गौरवशाली वर्षों को मनाते हुए आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। भारत सरकार द्वारा इस पहल का उद्देश्य स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए संघर्ष को और महत्वपूर्ण उपलब्धियां, जो हमने राष्ट्र के तौर पर अर्जित की है को याद करना है। आजादी का अमृत महोत्सव भारत के उन व्यक्तियों को समर्पित है जो देश के विकास और इसकी विकासवादी यात्रा में सहायक है। इस अभियान का उद्देश्य राष्ट्र निर्माण के लिए अथक प्रयासरत व्यक्तियों के हृदय में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार करना है। यह उल्लिखित है कि सभी नागरिकों को 13से15 अगस्त के दौरान अपने घरों पर तिरंगा फहराने के लिए प्रोत्साहित किया। इस कार्यक्रम से 50 गांव से 5000 लोगों तक संदेश पहुंचाकर आजादी का अमृत महोत्सव अभियान को सफल बनाया गया।

- **चलित प्रदर्शनी के माध्यम से बच्चों के अधिकारों के प्रति कर रहे जागरूक**

चलित प्रदर्शनी: सब बच्चों के अधिकार सब समझे सब बताएं कार्यक्रम को संचालित कर रहे जिला बाल अधिकार मंच के जिला सदस्य रामकिशोर चौधरी ने बताया कि मानव जीवन विकास समिति जिला बाल अधिकार मंच कटनी द्वारा चाईल्ड राईट्स अब्जर्बेटरी भोपाल के सहयोग से कटनी जिले की स्कूलों मे बाल अधिकारों के प्रति जागरूकता कार्यक्रम चलित प्रदर्शनी के माध्यम से 14 नवम्बर से 20 नवम्बर 2022 तक कार्यक्रम चलाया। **अभियान के तहत 1500 लोगों को जागरूक किया गया।** जिसमे बड़वारा ब्लाक की शासकीय हाई स्कूल बिजौरी शासकीय हाई स्कूल मझगवां मे स्कूल प्राधानाचार्य शिक्षक छात्र व अन्य समाजसेवीयों की उपस्थिति मे कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। बच्चों से किया गया संवाद. बताये महत्वपूर्ण सुझाव व संदेश! हम नही चाहते: असमानता खराब स्वास्थ असुरक्षा गुमनाम शिक्षा से दूरी अस्पृस्यता मानसिक दबाव उपेक्षा काम का बोझ बाल विवाह हिंसा आदि पर प्रकाश डाला गया। हम चाहते हैं: समानता स्वास्थ सुरक्षा स्वच्छता प्यार दुलार शिक्षा अहिंसा शान्ति आदि पर प्रकाश डाला गया। हम नही होने देंगे: असमानता अस्वस्थता असुरक्षा गुमनाम शिक्षा से दूरी अस्पृस्यता मानसिक दबाव उपेक्षा काम का बोझ बाल विवाह हिंसा आदि पर प्रकाश डाला गया। हम सब मिलकर करेंगे: समानता का प्रयत्न बच्चों की पूर्ण सुरक्षा मानसिक दबाव मे कमी अच्छी शिक्षा सुलभ सम्पूर्ण विकास के कार्य करेंगे।

"स्टोरी"

(1) बीज बैंक की स्थापना से प्राकृतिक खेती को मिल रहा बढ़ावा

मानव जीवन विकास समिति पिछले 4 वर्षों से बीआरएलएफ के सहयोग से 9000 परिवारों के साथ एनपीएम आधारित खेती पर काम कर रही है। एनपीएम आधारित खेती के तहत हम किसानों के साथ जल संरक्षण भूमि विकास वृक्षारोपण पशुधन प्रबंधन पारंपरिक बीजों के प्रचार और संरक्षण और आधुनिक कृषि तकनीकों पर जागरूकता पर काम करते हैं। हम देख रहे हैं कि किसान धीरे-धीरे बाजार पर निर्भर होते जा रहे हैं जमीन की जुताई से लेकर अनाज के भंडारण तक किसान को पैसा खर्च करना पड़ता है जिसमें से एक खर्च बीज का भी होता है। वर्तमान समय में 80 प्रतिशत से अधिक किसान हर सीजन में बाजार से महंगे दामों पर बीज खरीदते हैं कभी-कभी बाजार में बीज उपलब्ध न होने के कारण फसल की बुआई में भी देरी होती है जिससे उत्पादन पर भी असर पड़ता है। देशी बीज धीरे-धीरे विलुप्त होते जा रहे हैं जिसका सबसे बड़ा कारण किसानों की बाजार पर निर्भरता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए एमजेवीएस द्वारा गांव-गांव में देशी बीजों के संरक्षण के प्रति किसानों को जागरूक किया गया और गांव स्तर पर 30 पारंपरिक बीज बैंक की स्थापना की गई जो स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और ग्राम विकास समितियों वीडीसी द्वारा संचालित है।

बीज बैंक की प्रक्रिया.

सभी बीज बैंक सामुदायिक घरों में स्थापित किए जाते हैं मूल रूप से एसएचजी और वीडीसी सदस्यों के घरों में जिसके लिए समुदाय द्वारा कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। सभी बीज बैंक स्वयं सहायता समूहों और वीडीसी द्वारा चलाए जा रहे हैं। इस कार्य को पूरा करने के लिए एमजेवीएस ने एसएचजी और वीडीसी सदस्यों को बीज बैंक की प्रक्रियाओं और नियमों किसानों से बीज कैसे एकत्र करना है बीज सही है या नहीं बीज का भंडारण कैसे करना है और दस्तावेजीकरण के बारे में प्रशिक्षित किया। बीज बैंक के नियमों के अनुसार यह निर्धारित किया जाता है कि किसान को कितना बीज दिया जाना है ताकि बीज अधिक से अधिक किसानों तक पहुंच सके। यदि किसी किसान ने बीज लिया है और सही समय पर वापस नहीं करता है तो उस पर कितना जुर्माना लगेगा आदि। प्रत्येक बीज बैंक में नियम निर्धारित होते हैं और इन्हीं के आधार पर समूह के सदस्य कार्य करते हैं। सभी बीज बैंकों में एक रजिस्टर होता है जिसमें बीज एवं किसानों से संबंधित समस्त जानकारी समूह के सदस्यों द्वारा निर्धारित प्रारूप के आधार पर भरी जाती है।

बीज संग्रहण एवं भंडारण की प्रक्रिया .

जब कोई किसान बीज बैंक से बीज लेने आता है तो उसे पहले ही बता दिया जाता है कि जब भी बीज जमा करें तो बीज साफ और सूखा होना चाहिए यदि नहीं होगा तो बीज वापस कर दिया जाएगा। किसान को बीज देने से पहले बीज बैंक के सभी नियम बताए जाते हैं और निर्धारित प्रारूप में पूरी जानकारी लिखी जाती है और किसान के हस्ताक्षर कराए जाते हैं ताकि भविष्य में इन दस्तावेजों के आधार पर बीज निकाला जा सके। किसान से बीज प्राप्त करने के बाद समूह के सदस्यों की जिम्मेदारी है कि वे अलग-अलग बीजों को निर्धारित जैविक विधि से अलग-अलग ड्रमों डिब्बों और बोरियों में पैक करें ताकि बीज खराब न हों। भंडारण के लिए संस्था द्वारा एयरटाइट प्लास्टिक ड्रम एयरटाइट प्लास्टिक डिब्बे और एयरटाइट बोरियां उपलब्ध कराई गई हैं जिनमें बीज भंडारित किए जाते हैं।

(2) श्री विधि से खेती में उपलब्धि

एमजेवीएस पिछले चार साल से तेंदूखेड़ा ब्लॉक के चिरकोना ग्राम पंचायत के ढोढ़ा गांव में आजीविका संवर्धन पर काम कर रहा है। हमने धोडा गांव में उन्नत कृषि पद्धतियों पर कई बैठकें और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। प्रारंभिक प्रशिक्षण में भाग लेने के बाद कई किसानों ने एसआरआई तकनीकों में अपनी रुचि दिखाई और इसे अपनाया। उनमें से एक थे हल्ले सिंह गोंडए उनके परिवार में स्वयं माँ पत्नी और दो बच्चे 5 सदस्य हैं। उनके पास 2 एकड़ जमीन है जिसमें आधा एकड़ जमीन पर सब्जी और बाकी जमीन पर अनाज और दाल की फसल उगाते हैं। उन्होंने कहा कि बीआरएलएफ परियोजना के कार्यान्वयन से पहले वह केवल रसायन आधारित खेती करते थे और फसलों में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग करते थे।

उन्होंने बताया कि मई 2020 को उन्हें एनपीएम आधारित कृषि एवं एसआरआई तकनीक पर खेलन सिंह गोंड (पंचायत सहायकद्ध द्वारा प्रशिक्षित किया गया था। इससे प्रेरित होकर उन्होंने एक बीघे जमीन में एसआरआई तकनीक से धान की खेती की। जिसमें उन्हें पहले से अधिक उत्पादन मिला और एनपीएम आधारित खेती से खेती की लागत भी कम आयी। पिछले वर्षों के अनुभव के आधार पर इस वर्ष (2022ए23द्ध उन्होंने श्री खेलन सिंह के मार्गदर्शन में 1ए5 एकड़ भूमि में एसआरआई किया है। इस वर्ष हाले सिंह ने जैविक खाद और जैविक कीटनाशकों के साथएसाथ खरपतवार हटाने के लिए वीडर का भी उपयोग किया। मानव जीवन विकास समिति ने हर 3 गांवों के बीच में एक टीआरसी (तकनीकी संसाधन केंद्रद्ध बनाया है जहां आईईसी सामग्री जैविक खाद और कुछ कृषि उपकरण (वीडर स्प्री पंप और टिपनद्ध उपलब्ध हैं जिसका लाभ सभी किसान उठा सकते हैं।

हल्ले सिंह ने बताया कि वीडर के प्रयोग से हमें अधिक लाभ हुआ है निराईएगुड़ाई में लगने वाला खर्च एवं समय की बचत हुई है यह तकनीक हम सभी के लिए बहुत अच्छी है। माह अक्टूबर 2022 में ब्लॉक समन्वयक श्री नरेश खटीक ने धोड़ा गांव में भ्रमण कर श्री हल्ले सिंह से मुलाकात कर श्री हल्ले सिंह से श्री विधि एवं धान उत्पादन के अनुभव के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि नरेश जी इस वर्ष हमें लगभग 30 क्विंटल धान जो पहले से 15 क्विंटल अधिक है और यह लाभ हमें श्री विधि के कारण मिला है। उन्होंने कहा कि श्री विधि से हमें दो मुख्य लाभ हुए हैं पहला धान का उत्पादन बढ़ा है और दूसरा खेती की लागत कम हुई हैए

(3) आधुनिक व प्राकृतिक खेती बनी सहारा

श्री बड्डे पटेल के पिता श्री सोने सिंह पटेल एक छोटे किसान हैं। वे तेंदूखेड़ा ब्लॉक के मगदुपुरा गांव में रहते हैं और उनके पास 3 एकड़ खुद की जमीन है। उनके परिवार में 5 सदस्य हैं वह खुद उनकी पत्नी और तीन बच्चे हैं। सभी सदस्य कृषि पर निर्भर हैं। वह वीडीसी के सदस्य और ALIVE FPO के शेयरधारक भी हैं। उनकी सारी कृषि भूमि सिंचित है और वह एक एनपीएम किसान हैं। एक साल पहले वह केवल अनाज की फसलें उगाते थे और घर के पास केवल किचन गार्डन जैसे घरेलू उपयोग के लिए सब्जियों की खेती करते थे।

पिछले वर्ष उन्होंने एमजेवीएस कार्यकर्ता श्री मिलन धुर्वे के साथ मगदुपुरा के संतोष पटेल की भूमि पर जाकर सब्जी उत्पादन में पॉली मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई प्रणाली देखी और उस प्रणाली से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने मिलन धुर्वे से कहा कि हम भी इस प्रकार की तकनीक से सब्जी उत्पादन में रुचि रखते हैं कृपया इस बारे में हमारा मार्गदर्शन करें। इसके बाद उन्होंने उन्हें उद्यानिकी विभाग की योजनाओं के बारे में बताया और व्यावसायिक स्तर पर सब्जी की खेती करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने उन्हें बताया कि उद्यानिकी विभाग व्यवसायिक स्तर पर सब्जी की खेती को बढ़ावा देने के लिए ड्रिप प्रणाली पोली मल्चिंग और सब्जी बीज पर अनुदान दे रहा है। उन्होंने कहा कि यदि आप रुचि रखते हैं तो सबसे पहले आपको उद्यानिकी विभाग के ऑनलाइन पोर्टल पर पंजीकरण कराना होगा।

बड्डे पटेल ने कहा कि मैडम मुझे इसके लिए दिलचस्पी है कृपया आगे की प्रक्रिया के लिए हमें सुझाव दें। पंचायत सहायक ने कहा कि पंजीकरण के लिए आपको आधार कार्ड बैंक पास बुक खाता बही और पासपोर्ट साइज फोटो की आवश्यकता होगी। ये सभी दस्तावेज लेकर आप कल झलोन बाजार में मुझसे मिलें। हम आपका रजिस्ट्रेशन करा देंगे। अगले दिन निर्धारित समय के अनुसार वह सभी आवश्यक दस्तावेजों के साथ पंचायत सहायक से मिला और एमपी ऑनलाइन दुकान पर जाकर पंजीयन कराया। पंचायत सहायक ने कहा कि जब आपका आवेदन स्वीकृत हो जाएगा तो उद्यान विभाग आपसे संपर्क करेगा। मई 2022 में उद्यानिकी विभाग के ब्लॉक अधिकारी ने श्री बड्डे पटेल से संपर्क किया और कहा कि एक एकड़ भूमि के लिए पोली मल्चिंग के साथ ड्रिप सिस्टम के लिए आपका आवेदन स्वीकृत हो गया है। कुल 56 हजार का सामान है जिसमें आपको 28000 रुपये जमा करने होंगे। जिसमें आपको ड्रिप सिस्टम पोली मल्चिंग सब्जी के बीज और वर्मी वेद सामग्री मिलेगी। सभी आवश्यक प्रक्रियाएँ पूर्ण करने के बाद बड्डे पटेल ने उद्यानिकी विभाग से सामग्री एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया। बागवानी से सामग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने बागवानी और एमजेवीएस टीम की मदद से एक एकड़ भूमि में सब्जी उगाई।

श्री बड्डे पटेल ने बताया कि आधुनिक तरीके से सब्जियों की खेती करने का यह उनका पहला अनुभव है जो बहुत अच्छा है। उनका कहना है कि ड्रिप पॉली मल्चिंग और आधुनिक कृषि तकनीक से उनका बहुत सारा काम आसान हो गया है इससे समय की बचत होती है और फसल उत्पादन भी बेहतर होता है। उन्होंने बताया कि एक महीने में उन्होंने सब्जी की खेती से 50 हजार रुपये कमाए। पंचायत सहायक ने बताया कि संतोष पटेल की खेती और तकनीक को देखकर कई किसान प्रेरित हुए हैं और वे भी इसी तकनीक से खेती करना चाहते हैं। इस वर्ष कुल 45 किसान इस प्रकार की तकनीक से सब्जी की खेती कर रहे हैं।

(4) अजोला घास किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है

कन्छेदी गोंड एक किसान हैं. वह दमोह जिले के तेंदूखेड़ा ब्लॉक के सेहरी ग्राम पंचायत के सेहरी गांव में रहते हैं। उनके परिवार में 4 सदस्य हैं. उनके पास 3 एकड़ जमीन और 7 जानवर हैं। पशुधन में 3 गाय 2 भैंस और 2 बैल शामिल हैं। कनछेदी का मुख्य व्यवसाय कृषि है इसके साथ ही वह पशुपालन भी करते हैं। कृषि और पशुपालन दोनों ही उनकी आय का स्रोत हैं। वह एमजेवीएस का एक लक्षित परिवार है। वह वीडीसी और एनजीएस समूह के भी सक्रिय सदस्य हैं। वह एक एकड़ जमीन पर एनपीएम खेती कर रहे हैं। अक्टूबर 2021 माह में पंचायत सहायक श्रीमती मिलन धुर्वे ने कन्छेदी गोंड गोंड के घर जाकर उनसे मुलाकात की। दौरे के दौरान पंचायत सहायक ने उनसे अजोला गड्ढे की तैयारी के बारे में चर्चा की और उन्हें अजोला घास के फायदों के बारे में बताया। पंचायक सहायक ने उनसे पूछा कि वर्तमान में आपकी गाय.भैंस कितना दूध दे रही है। तो उन्होंने कहा गाय 500 ग्राम और भैंस 1.5 लीटर. इस पर पंचायत सहायक ने कहा कि अगर आप अजोला घास पशुओं को खिलाते हैं तो आपके पशु का दूध उत्पादन बढ़ सकता है इसके साथ ही यह धान की खेती के लिए उर्वरक का काम करती है यह नाइट्रोजन की कमी को पूरा करती है.

इस पर कन्छेदी ने कहा कि यह हमारे लिए बहुत खुशी की बात है. यदि पशुओं का दूध उत्पादन बढ़े तो कृपया हमें बताएं कि क्या करना चाहिए। पंचायत सहायक ने बताया कि आपको 6 फीट लंबा 3 फीट चौड़ा और 1 फीट गहरा सीमेंट का टैंक बनाना होगा जिसमें अजोला के बीज डालें अजोला के लिए पानी मिट्टी और गोबर की आवश्यकता होती है। एजोला एक प्रकार की घास है जो पानी पर तैरती है। कनछेदी ने कहा कि अभी हमारे पास इतना पैसा नहीं है कि हम सीमेंटेड टंकी बनवा सकें; यदि कोई अन्य समाधान है तो कृपया हमें बताएं। पंचायत सहायक ने कहा कि हां एक उपाय है जो सस्ता तो होगा लेकिन ज्यादा टिकाऊ नहीं होगा इसके लिए आपको 12 फीट लंबी और 6 फीट चौड़ी मोटी पन्नी चाहिए जिससे हम जमीन के ऊपर या अंदर गड्ढा खोदकर टैंक बना सकें. आधार। कन्छेदी ने कहा कि मैडम आज मैं बाजार जाकर पन्नी ले आता हूं आप कल आकर अजोला टैंक बनवा लेना। अगले दिन पंचायत सहायक कंछेदी के घर गए और पन्नी की मदद से अजोला टैंक बनाया और उसमें अजोला के बीज डाले और किसान को यह भी बताया कि इसे जानवरों को कैसे खिलाना है। तब से कनछेदी लगातार अपने मवेशियों को अजोला खिला रहे हैं।

दिसंबर 2022 में परियोजना समन्वयक श्री चंद्रपाल कुशवाहा ने सेहरी गांव का दौरा किया और कन्छेदी गोंड से मुलाकात की और उनसे अजोला और इसके लाभों के बारे में पूछा तो कन्छेदी ने कहा कि अजोला घास के उपयोग से हमें बहुत लाभ हुआ है। जो पशु पिछले वर्ष गर्मियों में 1 लीटर दूध दे रहे थे वे पशु इस वर्ष 1.5.2 लीटर दूध दे रहे हैं। अजोला घास 1.1.5 लीटर के प्रयोग से पशुओं का दूध उत्पादन बढ़ा है जो हमारे और हमारे परिवार के लिए बहुत खुशी की बात है। कनछेदी ने यह भी बताया कि पहले वह दूध नहीं बेचते थे घर में ही इस्तेमाल करते थे लेकिन वर्तमान में वह बाजार में दूध बेचते हैं जिससे उन्हें प्रतिदिन 300.400 रुपये की कमाई हो जाती है. कनछेदी की तरह पूरे परियोजना क्षेत्र में 1500 से अधिक किसान हैं जो अजोला का उपयोग कर रहे हैं।

(5) मुर्गी पालन से जीवन मे आया बदलाव

मानव जीवन विकास समिति तेंदूखेड़ा ब्लॉक के 60 गांवों में काम कर रही है जिसमें से रिचकुड़ी गांव भी एक है। महंगवा ग्राम पंचायत में एक गांव है रिचकुडी. रिचकड़ी गांव तेंदूखेड़ा ब्लॉक से लगभग 50 किमी और दमोह जिले से 100 किमी दूर है। यह एक आदिवासी आधारित गांव है यहां की 80% आबादी आदिवासी है। रिचाकुडी गांव के परिवारों का मुख्य व्यवसाय कृषि पशुपालन और वन उपज का संग्रह है। यहां के 30% परिवारों को केवल एक मौसमी फसल मिलती है क्योंकि यहां सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं है। ये 30% परिवार पशुधन मनरेगा और वन उपज पर निर्भर हैं। बीआरएलएफ परियोजना का मुख्य उद्देश्य विभिन्न संसाधनों के माध्यम से समुदाय की आजीविका सुनिश्चित करना और सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र लाभार्थियों तक पहुंचाना है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए एमजेवीएस टीम सरकारी विभागों के साथ नेटवर्किंग कर विभागों की योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुंचाने में मदद करती है। जिसमें पशुपालन विभाग की बैकयार्ड पोल्ट्री योजनाएं भी शामिल हैं.

अप्रैल 2022 में वीडीसी बैठक के दौरान पंचायत सहायक श्री अवलेश गोंड ने सभी को बताया कि पशु चिकित्सा विभाग की बैकयार्ड पोल्ट्री योजना के तहत इच्छुक परिवारों को 450 रुपये में 45.45 मुर्गियां दी जा रही हैं जिसमें से आपको 225 रुपये का भुगतान करना होगा। . होगा तथा शेष 225 रूपये एमजेवीएस संस्था द्वारा दिये जायेंगे; प्रत्येक लाभार्थी को मुर्गी घर बनाने और उन्हें खिलाने के लिए 1100 रुपये भी मिलेंगे। मुर्गी पालन में रुचि रखने वाले सदस्य आवेदन कर सकते हैं। इस पर श्री नन्हेभाई गोंड ने कहा कि हम मुर्गी पालन करने के लिए तैयार हैं लेकिन समस्या यह है कि उनकी सुरक्षा कौन करेगा अगर मुर्गियों की देखभाल ठीक से नहीं की गई तो जानवर उन्हें नुकसान पहुंचा सकते हैं। मुर्गीपालन तभी सफल होगा जब उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की जायेगी। इस पर एमजेवीएस कार्यकर्ता श्री अवलेश ने कहा कि आप सामूहिक मुर्गी पालन भी कर सकते हैं लेकिन इसके लिए सभी की सहमति जरूरी है और सही जगह और सही व्यक्ति का होना भी जरूरी है जो मुर्गियों की देखभाल करेगा. इसके लिए हमें एक मुर्गीपालन समूह बनाना चाहिए जिसमें वही लोग शामिल हों जो मुर्गीपालन में रुचि रखते हों इस पर सभी प्रतिभागियों ने कहा कि यह सही है पहले समूह बनाएं फिर तय करें कि आगे क्या करना है। इसके बाद सर्वसम्मति से मुर्गीपालन समूह का गठन किया गया जिसमें नन्हे भाई सहित 11 लाभार्थी शामिल हैं।

मुर्गीपालन समूह गठन के बाद सभी की जिम्मेदारी तय की गई और एमजेवीएस कार्यकर्ता अवलेश गोंड की मदद से मुर्गीपालन के लिए फार्म भरवाए गए। अवलेश ने कहा कि हम इन सभी फार्मों को पशु चिकित्सा विभाग को सौंप देंगे और जब मुर्गियां आएंगी तो हम आपको सूचित कर देंगे तब तक आप जगह तय कर लें और पोल्ट्री फार्म बना लें ताकि जब मुर्गियां आएं तो उन्हें व्यवस्थित रखा जा सके. कृपया यह भी तय करें कि उनकी देखभाल कौन करेगा और खर्चों और लाभों को कैसे विभाजित किया जाएगा। तो सभी सदस्यों ने कहा कि हम सभी खर्च और लाभ को बराबर.बराबर बाँट लेंगे जो मुर्गी फार्म के चूजों की देखभाल और प्रबंधन करेगा उसे हम प्रतिदिन 100 रुपये देंगे।

अक्टूबर माह में सभी सदस्यों के सहयोग से हल्ले भाई की जमीन पर पोल्ट्री फार्म तैयार किया गया और मुर्गियों के रहने की व्यवस्था की गई। एक माह बाद उन्हें पशु चिकित्सा विभाग से नर्मदा निधि एवं कड़कनाथ नस्ल के 1 माह के 495 चूजे प्राप्त हुए सभी चूजों को सामूहिक पोल्ट्री फार्म में रखा गया जो वर्तमान में आधा किलो से 1 किलो तक बड़े हो गये हैं और विक्रय किये जा रहे हैं। अब तक कुल 7500 रुपये का चिकन बिक चुका है और धीरे.धीरे मुर्गियों का वजन बढ़ता जा रहा है जिसके कारण 2 महीने बाद एक चिकन 1200 से 1500 रुपये का बिकेगा. इस तरह का इनोवेशन ग्रामीणों के लिए पहला है जो लोगों को खूब पसंद आ रहा है. एमजेवीएस और पशु चिकित्सा विभाग के सहयोग से वर्तमान में पूरे परियोजना गांव में 915 परिवार मुर्गीपालन कर रहे हैं जिसमें 10 गांव के किसान सामूहिक मुर्गीपालन कर रहे हैं। यह पूरे तेंदूखेड़ा विकासखंड के लिए नवाचार और आश्चर्य है।

(6) मछली पालन ग्रामीण स्तर पर किसानों के लिए आय सृजन का एक हिस्सा है

जगदीश के पुत्र श्री सत्यनारायण एक छोटे किसान हैं। वह तेंदूखेड़ा ब्लॉक के समदई ग्राम पंचायत के पटेरिया गांव में रहते हैं। पटेरिया गांव तेंदूखेड़ा ब्लॉक से करीब 30 किमी दूर है. उनके स्वयं के परिवार में 4 सदस्य हैं पत्नी और दो बच्चे। उनके पास 2 एकड़ जमीन है जिसमें वे खेती करते हैं। गाँव में बीआरएलएफ परियोजना लागू होने से पहले सत्यनारायण रसायन आधारित खेती करते थे इसके साथ ही वह अपने परिवार की जीविका चलाने के लिए मनरेगा और आसपास के क्षेत्रों में मजदूरी भी करते थे। बीआरएलएफ परियोजना के कार्यान्वयन के बाद एमजेवीएस टीम ने ग्राम स्तर पर वीडीसी एसएचजी और एनपीएम समूहों का गठन किया और विभिन्न विषयों पर सभी ग्राम स्तरीय संस्थानों वीडीसी एसएचजी और एनपीएम समूहों और किसानों की क्षमता निर्माण किया। सत्यनारायण वीडीसी और एनपीएम समूह के भी सदस्य हैं। वह एक सक्रिय एनपीएम किसान हैं। वह एक एकड़ जमीन पर एनपीएम खेती कर रहे हैं। जून 2021 में वीडीसी की मासिक बैठक में एमजेवीएस ब्लॉक समन्वयक श्री नरेश खटीक ने सभी प्रतिभागियों से कहा कि आप मछली पालन भी कर सकते हैं; यह ग्रामीण स्तर पर आय सृजन का भी एक बड़ा स्रोत है। सरकार मछली पालन में रुचि रखने वाले परिवारों को सब्सिडी भी देती है। अगर आपके पास खेत तालाब या अन्य तालाब है तो आप मछली पालन कर सकते हैं। नरेश ने बताया कि अगर किसी के पास तालाब नहीं है तो वह सामुदायिक तालाब में भी मछली पालन कर सकता है इसके लिए ग्राम पंचायत या वन विभाग से अनुमति लेनी होगी.

इस पर श्री सत्यनारायण ने कहा कि सर मुझे मछली पालन का शौक है लेकिन मेरे पास तालाब नहीं है क्या हम सामुदायिक तालाब में मछली पालन कर सकते हैं? उन्होंने कहा कि हमारे गांव में एक तालाब है लेकिन वह वन विभाग का है इस पर नरेश ने कहा कि हम इस बारे में वन विभाग से बात कर सकते हैं. दूसरे दिन सत्यनारायण एमजेवीएस कार्यकर्ता खिलान सिंह और ब्लॉक समन्वयक नरेश खटीक ने वन विभाग जाकर तालाब में मछली पालन के संबंध में अधिकारियों से बात की। वन विभाग के अधिकारी ने कहा कि आप मछली पालन कर सकते हैं लेकिन इसके लिए आपको 5000 रुपये सालाना शुल्क देना होगा. इसके लिए आपको वन विभाग के साथ एक एग्रीमेंट करना होगा कि आप कितने साल के लिए तालाब को लीज पर लेना चाहते हैं. सत्यनारायण ने कहा कि सर मुझे मछली पालन के लिए तालाब पांच साल के लिए लीज पर चाहिए. इसके बाद वन विभाग के अधिकारी ने सत्यनारायण की सहमति से पांच साल का लीज एग्रीमेंट तैयार किया और तालाब को 5 साल के लिए सत्यनारायण को दे दिया. इसके बाद अगस्त माह में एमजेवीएस टीम ने सत्यनारायण को मछली पालन का उचित प्रशिक्षण और दमोह मत्स्य विभाग से 10000 मछली के बीज दिलवाए। मछली के बीज और प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होंने समय.समय पर मछलियों की उचित देखभाल की। छह माह बाद मार्च 2022 में जब तालाब का पानी कम होने लगा. सत्यनारायण ने धीरे.धीरे मछली बेचना शुरू किया उस समय मछली 500 ग्राम से 700 ग्राम की हो गई थी। सत्यनारायण ने पहले साल में ही 46 हजार की मछली बेच दी। सत्यनारायण पहले वर्ष की सफलता से बहुत खुश हुए और अगले वर्ष तालाब में और अधिक मछली बीज डालने का निर्णय लिया।

अगले वर्ष फिर अगस्त 2022 में उन्होंने एमजेवीएस के सहयोग से दमोह के मत्स्य पालन विभाग से मछली के बीज खरीदे। इस वर्ष उसने तालाब में 20000 बीज डाले। पहले वर्ष के अनुभव के अनुसार उन्होंने मछलियों की अच्छी देखभाल की। सत्यनारायण ने बताया कि इस साल मार्च 2023 तक उन्होंने 43 हजार रुपये की मछली बेची है उन्होंने बताया कि इस साल तालाब में पानी उपलब्ध है इसलिए अभी पूरी मछलियां तालाब से बाहर नहीं निकाली गई हैं वे धीरे.धीरे बाहर आ रही हैं और बेच रही हैं इसमें फिलहाल करीब 50000 रुपये तक की मछलियां तालाब में होंगी. सत्यनारायण बीआरएलएफ परियोजना और एमजेवीएस को धन्यवाद देते हैं कि अगर यह परियोजना और एमजेवीएस हमारे गांव में नहीं आती तो हमें इस प्रकार का रोजगार और लाभ नहीं मिलता। सत्यनारायण की तरह पूरे परियोजना गांव में कुल 96 परिवार हैं जिन्होंने बीआरएलएफ परियोजना की मदद से मछली पालन शुरू किया है।

(7) मधुमक्खी पालन से किसान की आर्थिक स्थिति मे आया बदलाव

श्री राम प्रसाद के पुत्र श्री गोविंद एक छोटे किसान हैं। वह तेंदूखेड़ा ब्लॉक के धनगोर गांव में रहते हैं और उनके पास 4 एकड़ खुद की जमीन है। उनके परिवार में 5 सदस्य हैं वह खुद उनकी पत्नी और तीन बच्चे हैं। वह पूरी तरह से कृषि और पशुधन पर निर्भर है। उनकी सारी कृषि भूमि सिंचित है और वह एक एनपीएम किसान हैं। वर्तमान में वह 4 एकड़ भूमि पर 100% एनपीएम आधारित खेती कर रहे हैं। वह एमजेवीएस के सहयोग से व्यावसायिक स्तर पर सब्जी उत्पादन भी कर रहे हैं। जैविक खेती को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने घर के पास 4 वर्मी बेड लगाए हैं जिससे इस वर्ष उन्होंने 120 क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन कर अपने खेत में उपयोग किया है जिससे उनका उत्पादन बढ़ा है और फसल उत्पादन की लागत भी कम हुई है।

तेंदूखेड़ा ब्लॉक के लिए मधुमक्खी पालन एक अजूबा था लोगों को लगता था कि यहां मधुमक्खी पालन नहीं हो सकता और न ही लोगों को इसके बारे में पता था। लेकिन एमजेवीएस ने इस अवधारणा को बदल दिया है एमजेवीएस और कृषि विभाग के सहयोग से नवंबर 2022 में तेंदूखेड़ा ब्लॉक के 5 किसानों ने मधुमक्खी पालन शुरू किया है उनमें से एक गोविंद हैं। सितंबर 2022 में गोविंद ने एमजेवीएस टीम के सहयोग से कृषि विभाग में मधुमक्खी पालन के लिए आवेदन किया था। कृषि और पशुपालन क्षेत्र में गोविंद की रुचि देखिए कृषि विभाग ने मधुमक्खी पालन का आवेदन स्वीकार कर लिया। मधुमक्खी पालन बॉक्स देने से पहले कृषि विभाग सभी लाभार्थियों को मधुमक्खी पालन के बारे में तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण देता है जब सभी लाभार्थियों को मधुमक्खी पालन के बारे में प्रशिक्षित किया जाता है तो नवंबर के महीने में सभी को 2-2 बॉक्स मधुमक्खी पालन प्रदान करते हैं। वर्तमान में धनगोर गांव में 3 किसान मधुमक्खी पालन कर रहे हैं और पूरे परियोजना क्षेत्र में कुल 5 किसान मधुमक्खी पालन कर रहे हैं। गोविंद एमजेवीएस के एक आदर्श किसान हैं जो कई किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं; उनके कार्यों और नवाचार को देखकर कई किसान बदल गए हैं।

(8) आदर्श जैव संसाधन केंद्र (बीआरसी केंद्र) बायो रिसोर्स सेंटर

समूह का नाम – गंगा जल

ग्राम. पटेरिया, ग्राम पंचायत. समदई, ब्लॉक. तेंदूखेड़ा, जिला. दमोह

मानव जीवन विकास समिति द्वारा जनवरी 2021 में बीआरएलएफ परियोजना के तहत गंगा जल समूह का गठन किया गया जिसमें 10 सदस्य हैं। यह तेंदूखेड़ा ब्लॉक के समदई ग्राम पंचायत के पटेरिया गांव में स्थित है। परियोजना का एक अत्यंत सक्रिय स्वयं सहायता समूह है। अब तक समूह की कुल बचत 3000 रुपये है। समूह के सभी सदस्य एनपीएम खेती में लगे हुए हैं और वे परिवार के अन्य सदस्यों को भी एनपीएम आधारित खेती करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। नवंबर माह में समूह की मासिक बैठक के दौरान पंचायत सहायक श्री खिलान सिंह गोंड और ब्लॉक समन्वयक श्री नरेश खटीक ने समूह सदस्यों से चर्चा की कि हमारा समूह 10 महीने का हो गया है, अब हमें कुछ आय सृजन गतिविधियों की भी योजना बनानी चाहिए। समूह सदस्यों ने कहा कि हम सभी सदस्य कृषि कार्य में लगे हुए हैं, हम सभी कृषि कार्य करने को इच्छुक हैं, खेती से संबंधित कोई भी कार्य हो तो अच्छा रहेगा और हमारा मन भी लगेगाए इस पर ब्लॉक समन्वयक ने कहा कि हम सभी एनपीएम आधारित कृषि कर रहे हैं और हमारा प्रयास है कि अधिक से अधिक लोग इस प्रकार की खेती करें, लेकिन कई किसान किसी कारणवश जैव कीटनाशक और उर्वरक तैयार नहीं कर पाते हैंए हम जैव कीटनाशक दवाई और जैव उर्वरक तैयार कर सकते हैं और हम इसे किसानों को कम कीमत पर बेच सकते हैं। इससे दो फायदे होंगे, एक तो किसानों को जैविक कीटनाशक और उर्वरक आसानी से उपलब्ध हो सकेंगे और दूसरा, समूह के सदस्यों को काम मिलेगा, जिससे उनकी आय में वृद्धि होगी। अगर आप इस काम के लिए तैयार हैं तो मानव जीवन विकास समिति भी इस काम में आपकी मदद कर सकता है जैसे भंडारण उपकरण, बोतल और ड्रम आदि। इस पर महिला ने कहा कि हम इस काम को करने के लिए तैयार हैंए इसके बाद ब्लॉक समन्वयक ने कहा कि ठीक है। अगली बैठक में हम बायो इनपुट यूनिट के नियम और विनियमन तय करेंगे और आवश्यक सामग्री और उपकरणों के बारे में भी चर्चा करेंगे। एक सप्ताह के बाद एमजेवीएस टीम ने फिर से एसएचजी सदस्यों के साथ बैठक की और इकाई के नियमों और विनियमों को तय किया और एसएचजी सदस्यों के बीच जिम्मेदारियों को वितरित कियाए उसके बाद आवश्यक सामग्री और उपकरणों की एक सूची तैयार की। ब्लॉक समन्वयक ने कहा कि हम परियोजना समन्वयक और सचिव से चर्चा के बाद एक सप्ताह के अंदर समूह को सभी सामग्री उपलब्ध करा देंगे। पिछली बैठक में चर्चा के अनुसार एमजेवीएस टीम ने सभी आवश्यक सामग्री खरीदी और एसएचजी को सौंप दी और सभी एसएचजी सदस्यों और ग्राम समुदायों की उपस्थिति में इकाई का उद्घाटन किया। सभी एसएचजी सदस्यों ने लगन से काम किया और 4 महीने में 11000 रुपये के जैव कीटनाशक और उर्वरक बेचे। जैव कीटनाशक इकाई को बढ़ावा देने के लिए एमजेवीएस ने ग्राम स्तर और ब्लॉक स्तर पर दीवार पेंटिंग कराई ताकि अधिक से अधिक लोगों तक जैव कीटनाशक इकाई के बारे में जानकारी पहुंच सके।

दमोह केवीके निदेशक और समदई ग्राम पंचायत सचिव और सरपंच ने अप्रैल 2022 को गंगा जल बीआरसी इकाई और बीज बैंक का दौरा किया और समूह की महिलाओं के प्रयासों से बेहद प्रभावित हुए। एसएचजी के सदस्यों ने बताया कि अब तक हम 12000 रुपये से अधिक की जैविक कीटनाशक और जैविक खाद बेच चुके हैं और हमारे बीज बैंक में 25 प्रकार की सब्जी और अनाज के बीज उपलब्ध हैं, जिनकी मात्रा लगभग 10 क्विंटल है। इस पर सरपंच ने कहा कि बीआरसी केंद्र व बीज बैंक सार्वजनिक स्थान पर होना चाहिए, जहां रोजाना कई लोग आते हों, ताकि बीआरसी व बीज बैंक का प्रचार.प्रसार आसानी से हो सके। सरपंच ने कहा कि हमारे पास समदई गांव में ग्राम पंचायत भवन है जो खाली है, यदि आप रुचि रखते हैं तो आप इसका उपयोग बीज बैंक और जैव आदानों को बढ़ावा देने के लिए कर सकते हैं। इस पर एमजेवीएस के ब्लॉक समन्वयक ने कहा कि ठीक हैए कृपया हमें लिखित रूप से अनुमति दें ताकि हम जल्द से जल्द पंचायत भवन में बीआरसी केंद्र और बीज बैंक शुरू कर सकें। केवीके निदेशक डॉण मनोज अहिरवार ने कहा कि जैव आदानों को बढ़ावा देने के लिए आप केवीके में ब्रांडिंग वाले होर्डिंग बोर्ड लगा सकते हैं और जैविक कीटनाशकों और उर्वरकों के कुछ नमूने भी केवीके में रख सकते हैं।

मई 2022 में एमजेवीएस की टीम ने पंचायत भवन में बीआरसी एवं बीज बैंक की स्थापना की तथा प्रचार.प्रसार हेतु वॉल पेंटिंग एवं ब्रांडिंग की। इसके साथ ही एमजेवीएस टीम ने जैविक कीटनाशक और उर्वरक को बढ़ावा देने के लिए केवीके में ब्रांडिंग के साथ होर्डिंग बोर्ड भी लगाए हैं और प्रचार के लिए हर जैविक कीटनाशक और उर्वरक का नमूना भी केवीके में रखा गया है। पूरे परियोजना क्षेत्र में एमजेवीएस, बीआरएलएफ और एन+3एफ के सहयोग से कुल 6 बीआरसी केंद्र चल रहे हैं, सभी बीआरसी से अब तक कुल 72000 रुपये मूल्य की जैविक खाद और जैविक कीटनाशक बेचे जा चुके हैं।

परियोजनाऐं			संचालित क्षेत्र	
क्रं.	फण्डिंग एजेंसी	विषयगत क्षेत्र	जिला	गांव
1	○ भारत रूरल लाईलीहुड फाउण्डेशन	आजीविका आधारित परियोजना	1	60
2	○ द फोर्ड फाऊण्डेशन	आजीविका आधारित परियोजना	2	100
3	○ अजीम प्रेमजी फाऊण्डेशन	आजीविका आधारित परियोजना	1	30
4	○ द न्यू वर्ल्ड फाऊण्डेशन एकता महिला मंच	महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम	20	192
5	○ मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड	ग्रामीण पर्यटन विकास कार्यक्रम	5	7
6	○ चाईल्ड राईट्स अब्जर्वेटरी	बाल अधिकारों की सुरक्षा	1	10
7	○ द टाइड्स फाऊण्डेशन	मतदाता जागरूकता कार्यक्रम	1	10
8	○ एसीसी (सीएसआर)	स्वावलम्बन और लीसा प्रोग्राम	1	16
9	○ नाबार्ड (सीएसआर)	जैव उर्वरक व जैव कीटनाशक प्रशिक्षण	1	1
10	○ जीवन्ती वेलफेयर चेरिटेबल ट्रष्ट (सीएसआर)	देवारण्य परियोजना (हर्बल नर्सरी)	1	1
11	○ एसबीआई फाऊण्डेशन (सीएसआर)	स्वच्छता प्रबंधन के तहत कचरा गाड़ी	1	1
12	○ डायट्रेन्डस् ज्वेलरी प्रायवेट लिमिटेड (सीएसआर)	जल संरक्षण कार्यक्रम	2	1
13	○ शशी सपोर्ट एसोसिशन (कॉरपस फण्ड)	शिक्षा सपोर्ट, रिस्क सपोर्ट	2	2

मानव जीवन विकास समिति अपने उद्धेश्यों को पूरा करने प्रयासरत है, लगातार अपने काम को अंजाम दे रही है। समिति के पास सभी प्रकार के आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध है जिसकी मदद से फण्डिंग एजेंसी का सपोर्ट मिल जाता है। समिति के पास 13 फण्डिंग एजेंसी अलग अलग विषयों पर काम करने के लिए सपोर्ट कर रही है। इन सभी परियोजनाओं को समिति अलग अलग जिलों संचालित कर रही है। परियोजनाओं मे मुख्यतः आजीविका आधारित परियोजना, महिला सशक्तिकरण परियोजना, ग्रामीण पर्यटन विकास कार्यक्रम, बाल अधिकारों की सुरक्षा कार्यक्रम, मतदाता जागरूकता कार्यक्रम, स्वावलम्बन कार्यक्रम, जैव उर्वरक व जैव कीटनाशी प्रशिक्षण कार्यक्रम, देवारण्य परियोजना (हर्बल नर्सरी), स्वच्छता कार्यक्रम, जल संरक्षण कार्यक्रम, छात्रवृत्ति योजना संचालित है।

उपलब्धियां

स्थायी कृषि

क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धिां	क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धिां
1.	गैर कीटनाशक प्रबंधन (NPM) प्रणाली से खेती करने वाले कुल किसान।	25000	9.	गैर कीटनाशी प्रबंधन आधारित खेती को बढ़ावा देना	6869
2.	मिट्टी परीक्षण कराकर कार्ड तैयार कराना	570	10.	नाडेप, भू–नाडेप निर्माण	1876
3.	श्री विधी से धान कि खेती को बढ़ावा देना	1575	11.	बीआरसी की स्थापना	40
4.	किचिन गार्डन को बढ़ावा देना	3554	12.	जैव उत्पाद इकाई कि स्थापना	7
5.	हल्दी, धनियां एवं मिर्ची कि खेती को बढ़ावा देना	750	13.	बाड़ी (फिंसिंग) लगवाना	508
6.	तुअर कि खेती को बढावा देना	1000	14.	प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना	6000
7.	कोदो एवं कुटकी कि खेती का बढ़ावा देना	450	15.	जैविक खेती को बढ़ावा देना	7500
8.	बीज बैंक की स्थापना	40	16.	वर्मीकम्पोस्ट निर्माण	372

वन अधिकार अधिनियम

17.	वन अधिकार अधिनियम के तहत प्राप्त भूमि (4 एकड़)	2 पविार
18.	वन अधिकार को लेकर ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तरीय संवाद	6
19.	वन अधिकार अधिनियम कानून 2006 के प्रति लोगों को बैठक व शिविर के माध्यम से जागरूकता	180
20.	वन अधिकार अधिनियम के तहत अधिकार पत्र मांग को लेकर ज्ञापन देना	8
21.	वन एप मित्र पोर्टल मे अपलोड आवेदनों के निराकरण की स्थिति जानने सूचना का अधिकार अधिनियम की जानकारी मांगी गई।	1

शासकीय योजनाओं का लाभ

क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धिां	क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धिां
22.	प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि सहायता	1470	26.	उद्याान विभाग कि ड्रिप, स्पिंकलर, कैरेट, वर्मी वेड एव सब्जियों के बीज से लाभान्वित किसान	95
23.	आयुष्मान कार्ड	1278	27.	प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना	1320
24.	प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना	1320	28.	समाजिक सुरक्षा योजना का लाभ	336
25.	किसान क्रेडिट कार्ड	426	29.	स्वास्थ्य – कुपोषित बच्चों को एनआरसी मे भर्ती	75

स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन

30.	स्वास्थ्य प्रबंधन	75	31.	स्वच्छता प्रबंधन एवं कचरा प्रबंधन	160

मृदा एवं जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण

क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धिां	क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धिां
32.	9 चैकडेम, स्टापडेम निर्माण	450	36.	कंटूर निर्माण	1000
33.	15 सामुदायिक तालाब	1500	37.	17 बोरी बंधान	1000
34.	25 खेत तालाब निर्माण	65	38.	283 मेड़ बंधान एवं भूमि समतलीकरण	889
35.	52 कुंआ निर्माण	110	39.	425 परिवार के यहां प्लान्टेशन	1545

स्थायी आजीविका

40.	व्यावसायिक सब्जी खेती	1500	43.	मछली पालन	78
41.	मुर्गी पालन	275	44.	मधुमक्खी पालन	15
42.	बकरी पालन	50	45.	वनोपज	1510

प्रशिक्षण और कौशल विकास

क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धियां	क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धियां
46.	कुल स्वयं सहायता समुह	581	52.	SHG का क्षमता निर्माण कार्यशाला	182
47.	कुल ग्राम विकास संगठन	135	53.	ग्राम विकास संगठन का क्षमता निर्माण कार्यशाला	135
48.	किसान उत्पादक संगठन (1)	4000	54.	सरकारी योजनाओ पर जागरूकता अभियान	68
49.	किसानो का प्रशिक्षण	730	55.	सरकारी विभागो के साथ आमुखीकरण कार्यशाला	135
50.	किसानो का एक्सपोजर	5	56.	बकरी, मुर्गी, मछली एवं मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण	20
51.	कृषि विभाग, उद्यान विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर एवं पशुपालन विभागो के द्वारा MJVS के कार्यक्षेत्रो में भ्रमण।				36

स्थानीय कला का विकास

क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धियां
56.	मिट्टी हस्तकला	41
57.	बांस हस्तकला	32
58.	लकड़ी हस्तकला	22
59.	स्थानीय कला एवं संस्कृति (लोक नृत्य एवं गायन)	10

ग्रामीण पर्यटन

60.	तमादी के साथ सदस्यता का रेनुअल हुआ।	1
61.	ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड भोपाल के साथ जुड़ाव।	1
62.	ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने होमस्टे का का निर्माण कराना।	7
63.	पर्यटक स्थल/धार्मिक स्थल/दार्शनिक स्थल/प्राकृतिक स्थल/ऐतिहासिक स्थलों की पहचान करना।	80
64.	ग्रामीण उत्पादो को बढ़ावा देना। (स्थानीय हस्तकला एवं हस्तकला शिल्प 1. लकड़ी के कलात्मक वस्तुऐं बनाना। 2. मिट्टी के बर्तन बनाना। 3. लोहे का सामान बनाना। 4. कपडा की वस्तुऐं बनाना। 5. पत्थर की वस्तुऐं बनाना आदि का विकास करना।	70

नवाचार

क्रं.	गतिविधियां	उपलब्धियां
65.	शिक्षा – बच्चों का स्कूल मे दाखिला	1000
66.	आंगनवाड़ी केन्द्र का रिनोवेशन एवं मनोरंजन सामग्री का वितरण	10
67.	ग्रामसभा जागरूकता कार्यक्रम (बैठक, चौपाल, संवाद, दिवाल लेखन आदि)	100
68.	ग्रामसभा मोबलाईजेशन	80
69.	हर घर तिरंगा अभियान (आजादी का अमृत महोत्सव) कार्यक्रम से जागरूकता	5000
70	बाल अधिकार पर (चलित प्रदर्शनी के माध्यम से जागरूकता)	1500
71.	मतदाता जागरूकता कार्यक्रम	500
72.	पठरा गांव मे बायो रिसोर्स सेंटर यूनिट की स्थापना	30
73.	ALIVE FPO के माध्यम से मसाले प्रसंस्करण इकाई की शुरूआत एवं ब्रांडिग	4
74.	प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना (किसानों का जुड़ाव)	350
75.	जैव उर्वरक एवं जैव कीटनाशी प्रबंधन प्रशिक्षण (15 दिवसीय)	30
76.	बच्चों द्वारा चित्रकारी प्रदर्शन	100

अन्य उपलब्धियां

77.	स्कालरशिप : एजुकेशन सपोर्ट	4
78.	स्कालरशिप : रिस्क सपोर्ट	12

''प्रशस्ति पत्र''

(1) कृषि के क्षेत्र में लघु उद्यान (मिलेट) फसलों के उत्पादन में उत्कृष्ट कार्य करने पर सम्मान

मानव जीवन विकास समिति को कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु गणतंत्र दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन कटनी द्वारा आयोजित भारत पर्व कार्यक्रम में कलेक्टर महोदय द्वारा सम्मानित किया गया। आपको बता दें की मानव जीवन विकास समिति विगत वर्ष 2000 से कृषि के क्षेत्र उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। समिति वर्तमान में 25000 किसानों के साथ कृषि के विविध तरीकों को अपनाकर कृषि को बढ़ाने का कार्य कर रही है। समिति से जुड़े किसान गैर कीटनाशी प्रबंधन आधारित खेती को अपनाकर अपनी आय को बढ़ा रहे है।

(2) स्वैच्छिक संगठनों का क्षमतावर्द्धन कार्यशाला मे रिसोर्सपरसन की भूमिका

मानव जीवन विकास समिति को संगठनात्मक क्षेत्र मे एक अच्छा अनुभव प्राप्त है। म.प्र. जन अभियान परिषद् द्वारा आयोजित स्वैच्छिक संस्थाओं के एक दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण मे बतौर रिसोर्सपरसन की भूमिका मे स्वैच्छिक संगठन सदस्यों को प्रशिक्षण के दौरान संस्थागत आवश्यक दस्तावेजीकरण एवं उपयोगी रिपोर्ट का संकलन सहित विभिन्न प्रकार के पंजीयन की जानकारी दी जिससे संगठन को बेहतर चलाया जा सके। संस्था के उत्कृष्ट कार्य एवं प्रशिक्षण मे रिसोर्सपरसन की भूमिका निभाने पर प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

(3) जैविक व प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में किसानों के हित में उत्कृष्ट कार्य करने पर सम्मान

किसान दिवस के उपलक्ष में किसान सम्मान कार्यक्रम का आयोजन दमोह मे किया गया जिसमे मानव जीवन विकास समिति दमोह कि पंचायत सहायक कार्यकर्ता मिलन बाई धुर्वे को किसानों के हित में उत्कृष्ट कार्य करने पर भाजपा कार्यालय दमोह द्वारा सम्मानित किया गया। इन्होने वर्ष 2022–23 मे जैविक एवं प्राकृतिक खेती के क्षेत्र मे नवाचार किया है जिससे किसानों को खेती से आय मे वृद्धि होगी। समिति की कार्यकर्ता मिलन धुर्वे को किसान दिवस पर दमोह जिले में प्राकृतिक खेती करने और इलाके में किसानो को जागरूक करने पर सम्मानित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र दमोह

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर

प्रशिक्षण पत्र

कृषक श्रीमति मिलन बाई धुर्वे ग्राम ढोंगा तहसील तेन्दूखेड़ा जिला दमोह के द्वारा वर्ष 2022 - 23 में जैविक एवं प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में नवाचार कार्य हेतु सराहना की जाती है। (प्राकृतिक खेती) के क्षेत्र में सराहनीय कार्य हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र दमोह द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जा रहा है।

कृषि विज्ञान केन्द्र दमोह इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

दिनांक 23/12/22

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

(4) स्टेट मेडिकल प्लांट्स बोर्ड, आयुस डिपार्टमेंट ऑफ मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित कार्यशाला मे सहभागिता

मानव जीवन विकास समिति अपने समिति मे स्थापित एकता नर्सरी मे लगभग 200 प्रकार के मेडिसनल प्लान्ट्स को संजाये हुए है। यही कारण है कि आयुष विभाग के साथ जुड़ाव बना और राज्य स्तरीय कार्यशाला मे अपने कार्य को बढ़ाने के लिए भागीदारी की।

State Medicinal Plants Board

Ayush Department, Government of Madhya Pradesh

One Day State Level Seminar on

"Plants of Medicinal Importance Found in Madhya Pradesh"

& Workshop on

"Proposal Preparation for seeking grant from National Medicinal Plants Board"

Certificate

This is to certify that Dr./Mr./Ms. निर्भय सिंह *of* मानव जीवन विकास समिति कटनी (म०प्र०)

*has participated in a one day **State Level Seminar** funded by National Medicinal Plants Board, Ministry of Ayush, Govt. of India and organized by State Medicinal Plants Board, Ayush Department, Govt. of Madhya Pradesh, Bhopal on 20th March 2023.*

Prateek Hajela (IAS)
Principal Secretary,
Ayush Department, Govt. of Madhya Pradesh

Abhishek Singh (IAS)
Chief Executive Officer,
State Medicinal Plants Board, Madhya Pradesh

''प्रशंसा पत्र''

प्रशंसा पत्र

मानव जीवन विकास समिति एक गैर सरकारी संस्था है जो पिछले 5 सालो से भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन (BRLF) के सहयोग से कृषि एवं पशुपालन आधारित आजीविका परियोजना का संचालन दमोह जिले के तेंदूखेड़ा ब्लॉक के 25 ग्राम पंचायतो के 60 गावो में कर रही है|

पशुपालन विभाग और मानव जीवन विकास समिति दमोह जिले के तेंदूखेड़ा ब्लॉक में मिलकर कार्य कर रहे है| पशुपालन विभाग की योजनाओ को ग्राम स्तर तक पहुचाने में एवं किसानो को पशुपालन विभाग से जोड़ने में संस्था का महत्वपूर्ण योगदान रहा है| पशुपालन विभाग कि बैकयार्ड पोल्ट्री योजना और पशु टीकाकरण योजना को ग्राम स्तर पर क्रियान्वित करने में संस्था के कार्यकर्ताओ कि महत्वपूर्ण भूमिका रही है| संस्था के सहयोग से पशुपालन विभाग कि बैकयार्ड पोल्ट्री योजना के तहत 700 से ज्यादा परिवारों ने मुर्गी पालन को अपनाया है जो बहुत ही सराहनीय कार्य है|

10/2/23
उपसंचालक
पशुपालन एवं डेयरी विभाग दमोह (म.प्र.)
Dr. A.W. Khan
Deputy Director
Animal Husbandry & Dairy
Damoh (M.P.)

कार्यालय–सहायक संचालक, मत्स्योद्योग, जिला–दमोह (म.प्र.)

E-mail–adfishdam@mp.gov.in फोन नं. : 07812–222810

प्रशंसा पत्र

मानव जीवन विकास समिति एक गैर सरकारी संस्था है जो भारत रूरल लाइवीहुड फाउंडेश्न के सहयोग से मत्स्य पालन मे आजीवका का संचालन दमोह जिले के तेंदूखेडा ब्लाक मे कर रही है मत्स्य विभाग एवं मानव जीवन विकास समिति जिले के तेंदूखेडा ब्लाक मे मिलकर कार्य कर रहे है। मत्स्य विभाग की योजनाओ का ग्राम स्तर पर पहुचाने एवं किसानों को जोडने मे मानव जीवन समिति द्वारा इस वर्ष उल्लेखनीय कार्य किया गया है जिसमे दूरदराज के किसानो को उनके निजी तालाबों मे मत्स्य बीज संचयन कराने हेतु उत्प्रेरित करना एवं अन्य योजनाओ मे जानकारी ग्राम स्तर तक पहुचाने मे सराहनीय कार्य किया गया है।

हम मानव जीवन विकास समिति को मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास विभाग के साथ मिलकर मत्स्य कृष्कों के उत्थान हेतु सराहनीय कार्य करने हेतु धन्यवाद देते है एवं विभाग के साथ इसी प्रकार मिलकर कार्य करते रहें।

10.2.23
सहायक संचालक मत्स्योद्योग
जिला दमोह (म.प्र.)

कार्यालय वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र, दमोह

सागर नाका, मड़ियाहार, दमोह पेट्रोलियम के सामने
ईमेल kvkdamoh@rediffmail.com

कं: /कृ.वि.के / दमोह / 2022–23 / 819 दिनांक: 09-02-23

प्रशंसा पत्र

मानव जीवन विकास समिति एक गैर सरकारी संस्था है जो पिछले 5 सालो से भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन (BRLF) के सहयोग से कृषि एवं पशुपालन आधारित आजीविका परियोजना का संचालन दमोह जिले के तेंदूखेड़ा ब्लॉक के 25 ग्राम पंचायतो के 60 गावो में कर रही है| हमें यह बताते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि कृषि विज्ञान केंद्र और मानव जीवन विकास समिति दमोह जिले के तेंदूखेड़ा ब्लॉक में मिलकर कार्य कर रहे है| कृषि विज्ञान केंद्र की योजनाओ को ग्राम स्तर तक पहुचाने में एवं किसानो को कृषि विज्ञान केंद्र से जोड़ने में संस्था का महत्वपूर्ण योगदान रहा है| कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित आवासीय प्रशिक्षण, ग्राम स्तरीय प्रशिक्षण, शैक्षणिक भ्रमण एवं फसल प्रदर्शन को ग्राम स्तर पर क्रियान्वित करने में संस्था के कार्यकर्ताओ कि महत्वपूर्ण भूमिका रहती है|

हम मानव जीवन विकास समिती को कृषि विज्ञान केंद्र के साथ मिलकर समुदाय के उत्थान हेतु सराहनीय कार्य करने हेतु धन्यवाद देते है एवं कृषि विज्ञान केंद्र के साथ आगे भी इसी प्रकार का जुड़ाव बना रहेगा|

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केंद्र दमोह
Senior Scientist & Head
Krishi Vigyan Kendra
DAMOH (M.P.)

म.प्र. डे–राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन
(एस.आर.एल एम.)
विकासखंड–तेन्दूखेड़ा

म.प्र. डे–राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन,तेन्दूखेड़ा
(म.प्र. शासन, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग)
तेन्दूखेड़ा 470880 (म.प्र.)
फोन नंबर 07603–263744
ईमेल – srlmtendukhedablock@gmail.com

पत्र क्र. 432/एसआरएलएम/2023 तेन्दूखेड़ा, दिनांक : 10/02/2023

प्रशंसा पत्र

मानव जीवन विकास समिति एक गैर सरकारी संस्था है जो पिछले वर्षो से भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन (BRLF) के सहयोग से कृषि एवं पशुपालन एवं जल संरक्षण आधारित आजीविका परियोजना का संचालन दमोह जिले के तेन्दूखेड़ा विकासखंड के 25 ग्राम पंचायतों के 60 गावों में कर रही है।

आजीविका मिशन और मानव जीवन विकास समिति दमोह जिले के तेन्दूखेड़ा सिकासखंड में मिलकर कार्य कर रहे है। आजीविका मिशन की योजनाओं को ग्राम स्तर तक पहुचानें में एवं महिला स्वयं सहायता समूह का गठन व संचालन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संस्था के कार्यकर्ताओं कि महत्वपूर्ण भूमिका रही है जो बहुत ही सराहनीय कार्य है।

विकासखंड प्रबंधक
एसआरएलएम–तेन्दूखेड़ा
जिला–दमोह (म.प्र.)

प्रभाव

- वन अधिकार अधिनियम के तहत काबिज वन भूमि का अधिकार पत्र प्राप्त हुआ।
- वन अधिकार से प्राप्त भूमि का समतलीकरण व खेती योग्य बनाया गया।
- वन अधिकार से प्राप्त भूमि पर पानी की सुविधा उपलब्ध कराई गई।
- अच्छी उपज लेने के लिए किसानों को एस.आर.आई. पद्धति से खेती कराई गई।
- पर्यावरण संरक्षण एवं जल संरक्षण को बढ़ाने प्लान्टेशन कराया गया।
- नाडेप, भूनाडेप, कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट खाद किसानों के घर तैयार कराया गया।
- जैव कीटनाशक प्रबंधन कराया गया।
- किसानों को सुविधानुसार बीज बैंक की स्थापना की गई।
- जैव संसाधन केन्द्र और तकनीकी संसाधन केन्द्र की स्थापना कराया गया।
- किचिन गार्डन से पोषण की गुणवत्ता मे सुधार हुआ है।
- ग्रामसभा मोबलाईजेशन से ग्रामसभा मे भागीदारी बढ़ी है।
- शासकीय योजनाओं का लाभ आसानी से लोगों तक पहुंच रही है।
- लोगों की आजीविका खड़ी करने स्वरोजगार को बढ़ावा मिला है।

भावी योजनाऐं

- समिति के कार्यक्षेत्र को दूसरे राज्यों मे फैलाना।
- 30 हजार किसानों के साथ आजीविका के साधन को मजबूत करना।
- कम से कम 5 जिले के 10 ब्लॉको मे सघन रूप से संगठन को मजबूत करना।
- रूरल टूरिज्म को 8 सर्किट से बढ़ाकर 15 सर्किट तक पहुंचाना।
- ग्राम स्तरीय संगठनों के सहयोग से 6 जैव उत्पाद इकाई की शुरूआत करना।
- 10 गैर कीटनासी प्रबंधन आधारित गांव बनाना।
- युवाओं के साथ (ग्रामीण एवं शहरी) नेटवर्क खड़ा करना।
- महिला सशक्तिकरण, बाल अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य पर ज्यादा बल देना।
- ट्रेनिंग सेंटर को जैव विविधिता के रूप मे विकसित कर तैयार करना।
- स्व–रोजगार को बढ़ावा देना।
- शत प्रतिशत सरकारी योजनाओं तक लोगों की पहुंच सुनिश्चित करना।
- प्राकृतिक खेती/जैविक खेती को बढ़ावा देना।
- अलाईव के सहयोग से तुअर दाल एवं मसाले का प्रसंस्करण एवं मार्केटिंग करना।

फोटो

प्राकृतिक संसाधन का प्रबंधन

मृदा संरक्षण

जल संरक्षण

पर्यावरण संरक्षण

वर्मी कम्पोस्ट खाद, नाडेप खाद, भू–नाडेप खाद

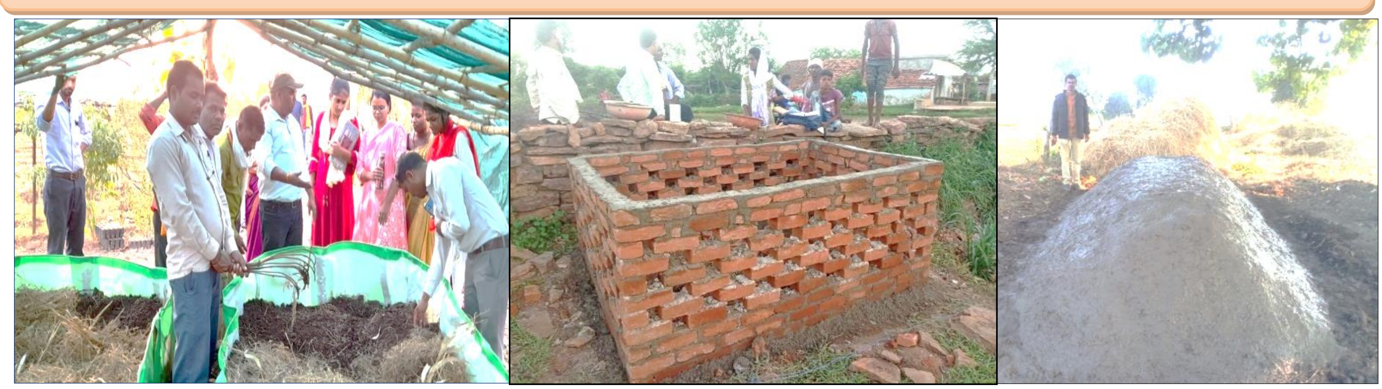

वन अधिकार अधिनियम के तहत बैठक एवं एडवोकेसी

स्थायी कृषि– प्राकृतिक, जैविक एवं गैर कीटनाशी खेती

स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं कचरा प्रबधन

स्थानीय कला का विकास

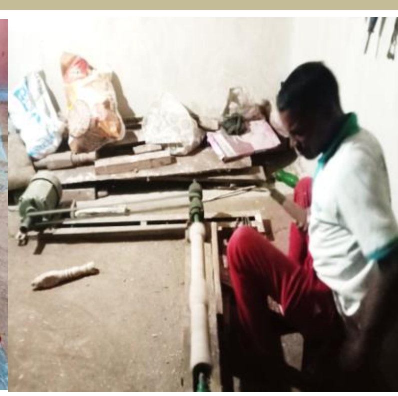

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्थायी आजीविका

बाल कल्याण और महिला सशक्तिकरण

अहिंसा प्रोत्साहन और ग्रामीण पर्यटन

प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम

तकनीकी संसाधन केन्द्र एवं जैव उत्पादन केन्द्र

प्रदर्शिनी – जैव उत्पाद एवं गैर कीटनाशी उत्पाद

किसान उत्पाद को बढाना

आजादी का अमृत महोत्सव (हर घर तिरंगा अभियान)

ग्रामसभा / मतदाता जागरूकता अभियान

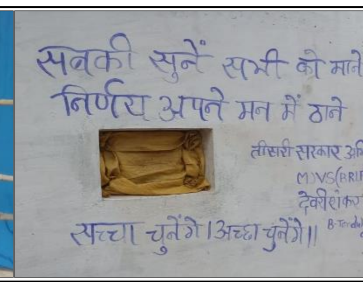

सरकारी विभाग के साथ संवाद

मीडिया कवरेज

समिति करा रही जीरो बजट की जैविक खेती : रासायनिक उर्वरकों से बचने एक से बढ़कर एक स्वदेशी उर्वरक व कीटनाशकों की बताई जा रही विधि

22 हजार किसानों में समिति ने फूंका आर्गेनिक फूड का मंत्र

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

कटनी. मानव जीवन विकास समिति बिजौरी में खेती, पानी, पर्यावरण और अजीविका मिशन के सिद्धांत के साथ आगे बढ़ रही है। यहां पर किसानों को जैविक खेती, गैर कीटनाशी प्रबंधन खेती, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया जा रहा है। समिति द्वारा 200 गांवों में 22 हजार किसानों के साथ गैर कीटनाशी प्रबंधन अधारित खेती, प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित किया जा रहा है। समिति में किसानों व समितियों को नाडेप, भू-नाडेप, हरी खाद, वर्मी कम्पोष्ट बनाने की विधि बताई जा रही है। इसके अलावा सुपर कंपोष्ट खाद, मटका खाद, खरपतवार नियंत्रण, जैविक कीट एवं रोग प्रबंधन, अन्नयास्त्र तैयार करने की विधि, मठास्त्र, नीमास्त्र, हींगास्त्र, लमित रस चूसक, पीली पट्टी, दशपर्णी, पोषक तत्व प्रबंधन, पंचगव्य, फसल एवं फल वर्धक टॉनिक, बीजामृत, बीज शोधक के बारे में बताया जा रहा है।

बिजौरी में किसानों को बीजामृत से बीज शोधन, गुड़ से बीज सोधन, बीज शोधन बीजामृत से, बीज शोधन गुड़ के उपयोग से, जीवामृत, अजोला, जैव उर्वरक, धान सघनीकरण के बारे में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसमें खेत का चयन, तैयारी, बीज चयन, बीजोपचार, नर्सरी की तैयारी, पौधे की रोपाई, खरपतवार नियंत्रण, रोग व कीट नियंत्रण, श्री विधि से धान की खेती की जानकारी दी जा रही है। खास बात तो यह है कि समिति में कई एकड़ में आर्गनिक फसलों का उत्पादन किया जा रहा और औषधियां तैयार की जा रही हैं। समिति के सचिव निर्भय सिंह का कहना है कि प्रशासन आर्गेनिक फूड की डिमांड को देखते हुए इस पर जोर दे तो यह एक बेहतर स्टार्टअप हो सकता है।

जल संरक्षण पर विशेष जोर- वर्षाजल को सहेजन के लिए समिति लगातार बेहतर काम कर रही है। स्वयं की पहल के साथ-साथ किसानों को जल संरक्षण के लिए प्रेरित किया जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में पौधरोपण पर जोर दिया जा रहा है। सचिव निर्भय सिंह का कहना है कि लोगों को समझना होगा कि खेती में रासायनिक खाद का उपयोग जिंदगी में जहर घोलने जैसा है। जैविक और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के साथ ही पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए पौधरोपण, जल संचय बेहद आवश्यक है। हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। मोटे अनाज मक्का, ज्वार, बाजरा कोदो-कुटकी के उत्पादन और उपयोग पर जोर देने के लिए संस्था आगे बढ़ रही है।

किसान दे रहे जैविक खेती की सीख

लोकोत्तर समाचार सेवा ■ झलौन/दमोह
www.elokottar.in

गांव डुकरसता पंचायत बगदरी ब्लॉक तेंदूखेड़ा जिला दमोह मानव जीवन विकास समिति कटनी दिल्ली सहयोग से किसान बाबूलाल गौड़ किसान जैविक खेती करते हैं ग्राम के सभी लोग जैविक खेती करते हैं और तरह-तरह की देसी दवाई बनाते हैं और अपने किचन गार्डन और चना और अन्य फसलों में दवाई का छिड़काव करते हैं और किसानों ने अपने घर में भूना डे और वर्मी बेड तैयार किया है जो केंचुआ खाद भी कहते हैं जैविक खेती जहाँ स्वास्थ्य व् भूमि की उपजाऊ शक्ति वर्धक होने के साथ साथ अनेको फायदा है जैविक खेती में रासायनिक खाद का उपयोग नहीं किया जाता जैविक खेती के प्रति किसानों को जागरूक करने के इस अवसर ग्राम पंचायत बगदरी पंचायत सहायक धन सिंह लोधी राम कृष्णा मेघराज बाबूलाल साहित किसानो की मौजूदगी रही।

हरिभूमि — जबलपुर - कटनी भूमि — 29 July 2022

आजीविका मिशन के तहत समूह की महिलाओं को दिया जा रहा प्रशिक्षण

जैविक खाद एवं दवाईयों से सुधरेगी उन्नत कृषि उपज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कटनी

मानव जीवन विकास समिति द्वारा सूक्ष्म उद्यम विकास कार्यक्रम के तहत नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक) के सहयोग से एनआरएलएम (राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन) द्वारा गठित समूह की महिलाओं का जैविक खाद एवं जैविक कीटनासी प्रबंधन को लेकर पठरा ग्राम पंचायत मे स्व-सहायता समूह की 30 महिलाओं का प्रशिक्षण आयोजित है। प्रशिक्षण का आयोजन संस्था प्रमुख निर्भय सिंह, नाबार्ड से डीडीएम धनेष, एनआरएलएम से राम सुजान एवं सूर्य प्रताप सिंह बघेल के सहयोग से पठरा स्थित गौ-शाला मे किया जा रहा है।

गौ-शाला को संचालित कर रहे स्व-सहायता समूह को यह प्रशिक्षण बहुत ही कारगर सिद्ध होगा। यह की प्रषिक्षण मे जैविक खाद के साथ साथ जैविक दवाईयां बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण रोजाना अपने माड्यूल के अनुसार परिवर्तनशील है।

प्रशिक्षण का शुभारम्भ पठरा ग्राम पंचायत भवन मे हुआ कार्यक्रम मे 4 स्व-सहायता समूह से लगभग 35 महिला सदस्यों ने भाग लिया। संस्था प्रमुख निर्भय सिंह, प्रशिक्षक मिलन धुर्वे एवं लाल सिंह (विशेषज्ञ जैविक कीटनासी प्रबंधन), संस्था कार्यकर्ता रामकिशोर चौधरी, चंद्रपाल कुशवाहा, कुमार पटेल, राधिका तिवारी, सरपंच, सचिव, रोजगार सहायक सहित अन्य सहयोगियों की भूमिका रही। प्रशिक्षण का उद्धेष्य जैविक खेती की उपयोगिता एवं रासायनिक खेती के दुष्परिणाम बताते हुए जैविक खेती को बढ़ावा देने नाडेप, भू-नाडेप, हरी खाद, कम्पोस्ट खाद, वर्मी कम्पोस्ट खाद, सुपर कम्पोस्ट खाद तैयार करने प्रयोग विधि बताई गई।

जानकारी — मानव जीवन विकास समिति कर रही किसानों की समस्या का निराकरण

किसानों को गांव में ही खाद बनाने का उपाय बता रहे

तेंदूखेड़ा। वर्तमान समय में कीटनाशक दवाओं के रेट बढ़ने से किसान काफी परेशान हो गए हैं और उनको अपनी उपज बढ़ाने के लिए बढ़े दामों की कीटनाशक दवाइयां खरीदनी पड़ती हैं। इन समस्याओं के निराकरण के लिए किसानों को गांव में ही खाद बनाने का उपाय मानव जीवन विकास समिति कटनी द्वारा किया जा रहा है।

गांव की खेती के लिए गांव में ही बनने वाली खाद को तेंदूखेड़ा ब्लाक के कई गांव के किसान अपना रहे हैं। कुछ किसानों ने जैविक खाद बनाकर उसे अपनी फसल में डालकर फसल तैयार भी की है और उसका फायदा भी मिला है। एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति कटनी बीआरएलएफ दिल्ली के सहयोग से गैर कीटनाशी प्रबंधन प्राकृतिक खेती कराने के साथ किसानों की आय बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। समिति सचिव निर्भय सिंह ने कहा कि रासायनिक उर्वरकों कीटनाशक दवाओं आदि के उपयोग से कृषि की लागत बढ़ने से अब कम लाभकारी व्यवसाय बनती जा रही है। ऐसे शून्य बजट प्राकृतिक खेती की अवधारणा न केवल किसान बल्कि देश और समाज के लिए भी कल्याणकारी साबित हो रही है। घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि शून्य बजट प्राकृतिक कृषि ऐसी तकनीक है जिसमें कृषि करने के लिए न किसी रसायनिक उर्वरक का उपयोग किया जाता है और न ही बाजार से कीटनाशक दवाएं खरीदने की जरूरत पड़ती है। नंदलाल सिंह, सुरेश सिंह गौंड ने बमनोदा खदरी हार में शून्य बजट प्राकृतिक कृषि प्रारंभ की है। लघु सीमांत किसान व छोटे किसान जिनकी जोत का आकार छोटा होने के साथ ही कृषि में निवेश की क्षमता है। ऐसे किसानों के लिए महंगे संसाधनों वाली खेती कर पाना संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में शून्य बजट प्राकृतिक कृषि एक अच्छा विकल्प है। यह खेतों के साथ साथ मानव और पशु स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए भी सुरक्षित पद्धति है। इसलिए मानव जीवन विकास समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा किसानों के साथ मिलकर गांव में ही गैर कीटनाशी प्रबंधन, प्राकृतिक दवाइयों का निर्माण समूहों के साथ मिलकर किया जा रहा है।

तेंदूखेड़ा। खेत में मौजूद किसान। ● नईदुनिया

दैनिक भास्कर — दमोह 10-12-2022

इंटरफेस बैठक ग्राम पंचायत चौरई में हुई

प्राकृतिक खेती करना हम सबके लिए अनिवार्य हैः विनोद राय

बनवार। इंटरफेस बैठक में लोगों से चर्चा करते समिति के सदस्य।

भास्कर संवाददाता | बनवार

मानव जीवन विकास समिति कटनी दमोह इंटरफेस बैठक का आयोजन ग्राम पंचायत चौरई ब्लॉक जबेरा में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सरपंच प्रतिनिधि सुनील सींग गौड ने की। बैठक में जनपद पंचायत अध्यक्ष जबेरा विनोद राय ने कहा कि प्राकृतिक खेती करना हम सबके लिए अनिवार्य है।

समिति जबेरा ब्लॉक एवं तेंदूखेड़ा ब्लॉक में अच्छा कार्य कर रही है। किसानों को आगे आकर कार्य करना चाहिए। घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि जनपद पंचायत जबेरा की 7 पंचायत 25 गांव में लोगों की आजीविका खड़ी हो गांव में कृषि आधारित गैर कृषि आधारित प्राकृतिक खेती के साथ शासन की योजनाओं को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास, ग्राम पंचायतों सरकारी विभागों के साथ मिलकर लोगों की लोगों के साथ ग्रामीण अंचलों के किसानों की आर्थिक स्थिति और समृद्धि सामाजिक सशक्तिकरण तथा समग्र विकास के लिए यह आवश्यक है कि त्रिस्तरीय पंचायत राज व्यवस्था बेहतर रूप से लागू हो। पंचायतें मजबूत प्रजातंत्र की बुनियाद हैं। बैठक में तिलक सींग, ओमकार, गोविंद यादव, राम सींग, बारे सींग, जम्मन सींग, उर्मिला बाई आदि शामिल रहीं। कार्यक्रम का संचालन अनिल ने किया। आभार कैलाश सींग ने माना।

प्राकृतिक कृषि की परिभाषा एवं सिद्धांत पर किसानों के खेतों का किया निरीक्षण

भास्कर न्यूज़। तेंदूखेड़ा

जनपद पंचायत तेंदूखेड़ा के ग्राम एवं ग्राम पंचायतों में मानव जीवन विकास समिति द्वारा किसानों को नवाचारों के माध्यम से प्राकृतिक खेती के विषय में जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। निर्भय सिंह ने कहा कि भूमि अन्नपूर्णा है। फसलों को बढ़ाने के लिए जो संसाधन चाहिए वह उनकी जड़ों के पास भूमि और पत्तों के पास वातावरण में ही पर्याप्त मात्रा में मौजूद होते हैं। भागवत कुमार अहिरवाल भोपाल ने कहा कि ऊपर से कुछ भी देने की जरूरत नहीं है। हमारी फसलें भूमि से मात्र 1.5 से 2.0 प्रतिशत तत्व लेती है। शेष 98 प्रतिशत से 98.5 प्रतिशत हवा, सूरज की रोशनी और पानी से लेती है। अजीत कारकरे इंदौर ने कहा कि वास्तविक तथ्य है कि बिना कुछ डालें जंगल में पेड़ों पर प्रतिवर्ष अनगिनत फल लगते हैं तो इसका मतलब हुआ कि उन पेड़ो की जड़ों के पास भूमि में वे सम्पूर्ण तत्व पहले से ही मौजूद है। यदि ये संपूर्ण खाद तत्व भूमि में उपलब्ध नहीं होतें तो पेड़ पौधो को उपलब्ध नहीं होतें। जंगल के किसी पेड़ पौधे के पत्ते तोड़े और उनका प्रयोग शाला में परीक्षण करें। उनमें किसी भी खाद तत्व की कमी नहीं मिलेगी।

घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि फसल हो या बागवानी की फसल हो उसका लागत मूल्य कम होगा। मुख्य फसल का लागत मूल्य अंतरधर्मीय मिश्र फसलों के उत्पादन से निकाल लेना और मुख्य फसल बोनस के रूप में लेना ही कम लागत खेती कहलाता है। इसी उद्देश्य को लेकर किसानों द्वारा परम्परागत कृषि बीजों को स्वयं तैयार कर रहे हैं। जैसे किसान सोने सींग गौड़ द्वारा प्याज का बीज तैयार किया गया है और कर रहे हैं।

दैनिक भास्कर — Fri, 16 December 2022 — https://epaper.bhaskarhindi.com/c/71151140

आत्मनिर्भरता की ओर कदम- श्रम दान से वनांचल दर्जनों गांव खोदे जा रहे कुएं पेयजल सिंचाई निस्तार के पानी निकाला जा रहा स्थाई समाधान

लोकोत्तर समाचार सेवा ■ दमोह
www.elokottar.in

वनांचल गांव में जल संकट सबसे बड़ी समस्या हुआ करती थी और पेयजल सिंचाई निस्तारी पानी की परेशानी का स्थाई समाधान सामूहिक प्रयासों से वन वासियों ने निकाला है इसका श्रेय जन जागरूकता एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति जनभागीदारी कार्यों के प्रशिक्षण को जाता है जिनको वन वासियों ने देखा सुना समझा श्रमदान से धरातल पर उतारा जी हां हम बात कर रहे हैं जनपद तेंदूखेड़ा ससाना खुर्द, डहरा मेहगांव फुलर इत्यादि गांव में 47 लोगों ने श्रमदान से कुएं खोदे जा रहे है विमला देवी ने बताया जनभागीदारी से तालाब निर्माण गोंद निकासी मेढ़ बंधान गहरीकरण जैसे कार्यों के बेहतर परिणाम से सीख लेकर 3710 किसानों को सामूहिक व्यक्तिगत जल उपलब्ध करवाने का प्रयास किया गया जिसमें महिलाओं के लिए जल समस्या से छुटकारा प्राप्त हुआ और सिर पर गगरी रखकर पानी ढोने की समस्या से निजात मिलीजामुन. ससनाखुर्द. फुलर, भैंसा, मझगवां, सरसैलामाल. देवरी शंकर. कुदपुरा. बगदरी. डुकरसता. तिपनी.बगदरी. डहरा टेडमहगवां खदरीहार खमरिया शिवलाल. धनेटा. इत्यादि गाँव में जन भागीदारी से जल संरक्षण किया गया है घनश्याम प्रसाद रायकवार नोहटा का ने बताया खुशहाल गांव बने एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति कटनी जिला दमोह के तेंदूखेड़ा ब्लॉक के गांव गांव में जनभागीदारी से श्रमदान के माध्यम से यह कार्य किए जा रहे हैं।

हरिभूमि — जबलपुर - कटनी भूमि — 28 Dec 2022

अधिकारी आर.के. बघेल के निर्देशन में संग्रहण एवं विक्रय कर रहे लोगों के विरुद्ध के पंजीबद्ध किये गये। मौके पर महुआ लाहन धरमू का

मानव जीवन विकास समिति का संयुक्त प्रशिक्षण शिविर संपन्न

रबी फसलों के उत्पादन एवं सब्जी उत्पादन तकनीक की दी जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कटनी

कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ ए.के तोमर के मार्ग निर्देशन में एवं कृषि वैज्ञानिक डॉ आर के मिश्रा,डॉ आर पी बैन, डॉ अर्पिता श्रीवास्तव,डॉ के पी द्विवेदी श्री संदीप चंद्रवंशी तथा प्रियंका धुर्वे एवं मानव जीवन विकास समिति के संचालक निर्भय सिंह उपस्थित थे। मंगलवार को कृषि विज्ञान केंद्र एवं मानव जीवन विकास समिति (एनजीओ) जिला कटनी के संयुक्त सौजन्य में प्राकृतिक खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक के प्रमुख डॉ ए के तोमर ने खेती को लाभ का धंधा बनाने हेतु रबी फसलों के उत्पादन तकनीकी एवं सब्जी उत्पादन तकनीक की विस्तृत जानकारी दी। केंद्र के वैज्ञानिकों ने प्राकृतिक खेती की विभिन्न तकनीकी जीवामृत बीजामृत ब्रह्मास्त्र बनाने की संपूर्ण तकनीकी एवं उसको उपयोग करने की विधि पर प्रशिक्षण दिया साथ ही वैज्ञानिकों ने खेती को लाभ का धंधा बनाने हेतु कम पानी चाहने वाली फसलों के बोने की सलाह दी एवं उनके प्रबंधन की तकनीकी पर प्रशिक्षण दिया। वैज्ञानिकों ने खेती के साथ-साथ सब्जी उत्पादन, पशुपालन,मुर्गी पालन एवं इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम अपनाने की किसानों को सलाह दी। यह कार्यक्रम मानव जीवन विकास समिति के माध्यम से आए हुए किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण दिया। जिसमें किसानों की संख्या 45 थी आज का प्रशिक्षण एवं कार्यशाला बहुत ही सारगर्भित रही किसानों ने वैज्ञानिकों द्वारा दी गई कृषि तकनीकों को अपनाने का संकल्प लिया और हमेशा वैज्ञानिक खेती करने को स्वीकार किया अंत में कृषक एवं मानव जीवन विकास समिति के अध्यक्ष श्री निर्भय सिंह ने वैज्ञानिक को धन्यवाद दिया

जैविक खेती को बढ़ावा देने सूक्ष्म स्तरीय नियोजन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

भास्कर न्यूज़। जबेरा

मानव जीवन विकास समिति सूक्ष्म स्तरीय नियोजन कार्यक्रम का आयोजन फोर्ड फाउंडेशन बिजोरी, कटनी एवं जबेरा द्वारा जबेरा ब्लॉक के विभिन्न ग्रामों में किया जा रहा है। जिसमें जबेरा विकासखंड की सात ग्राम पंचायतों के 25 ग्रामों में जैविक खेती को लेकर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जिसके तहत ग्राम डेलनखेड़ा एवं पारना में आयोजित किए गए कार्यक्रम में जीरो बजट पर खेती करना जैसे कि पुराने समय में किसान अपने हल और बैल से अपने खेत को तैयार करता था। इसी तरह केंचुआ खाद एवं जीवामृत बनाना जो पौधों की ग्रोथ को मजबूत बनाता है आदि के बारे में बताया गया। साथ ही अपने घर पर जैविक कीटनाशक दवाईयां तैयार करना एवं जैविक कीटनाशक दवाईयों को अपने घर कैसे तैयार करें आदि के बारे में बताया गया। कार्यक्रम दौरान फाउंडेशन के सदस्यों द्वारा ग्राम का सर्वे किया गया। सर्वे में जो देखा उसे प्राथमिकता के अनुसार गांव का नजरी, नक्शा और जमीन पर रंगोली से संसाधनों को दर्शाया गया एवं फाईल तैयार की गई। इस दौरान ब्लॉक समन्वयक राकेश कुमार विश्वकर्मा एवं पंचायत सहायक चरण सिंह मरावी ने जैविक खेती के बारे में ग्राम वासियों को बताया कि रासायनिक खेती से हमारी जमीन बंजर हो रही है जमीन को बचाने के लिए जैविक खेती हमारी जरूरत है एवं रासायनिक दवाईयों से कई बीमारियां भी होती है। इस दौरान अनिल धुर्वे, कैलाश तेकाम, सोनम झारिया, अर्चना, हरि बाई गौड़ सहित अन्य ग्रामवासी मौजूद रहे।

महिलाएं मिलकर बना रहीं आर्गेनिक दवाईयां

दमोह ❍ नया दौर

मध्य प्रदेश के दमोह जिला से 52 किलोमीटर की दूरी पर बसा बनांचल गाँव सेहरी परावहार जनपद पंचायत तेदूखेडा से 27 किलोमीटर की दूरी पर आदिवासी महिलायें मिलकर आर्गेनिक दवाईयां बनाने का प्रयास कर रही है और अपने खती में भी करती है उपयोग के साथ आप पास के लोग भी ले रहे हैं महिलाओं के इस कार्य से प्रेरणा गाय गोबर गौ मूत्र का लोग समझ रहे हैं उपयोग घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि मानव जीवन विकास समिति दमोह महिलाओं के लिए ड्रम, टंकी.तसला. दरी. तराजू. मिक्सी. लीटर. खलबट्टा. खाली बाटल. बीडर. तिपन. गेती. फावड़ा. किसान भी बर्मी खाद्य बर्मी बास के साथ भू. नाडेप. के माध्यम से बनस्पति का भी उपयोग समझ कर अपना रहे हैं देवी स्व- सहायता समूह एवं जय माता दी स्व- सहायता समूह की बहनें प्राकृतिक खेती के संबंध में मिलन बहिन के साथ कबिता बाई गौड. खिलोना बाई गौड. सरोज बाई गौड. शांति बाई गौड चंदा बाई गौड उमा रानी गौड. सबिता बाई गौड.इन महिलाओं को आगे बढने का हौसला मिला है गाँव में महिलायें गौ मूत्र. गोबर. मठा संकलन करती है और मटका खाद्य.जीवामृत. फसल फूल बर्धक टानिक.मठास्त्र . लमित.अग्नियस्त्र. बीजामृत.घन जीवामृत. बर्मी खाद्य. बर्मी बास इत्यादि किसान भाईयों से बनवाने का प्रयास कर रही हैं और उपयोग करने के लिए भी प्रेरित कर रही हैं मगदुपुरा. तिपनी. डुकरसता. धनगौर. रिचकुडी. पटेरियामाल. समदई. सनाई.माधो. देवरी शंकर.हर्रई. बमनोदा. इत्यादि गाँव में।

सस्ता और आसान है बीज शोधन का तरीका

कार्यशाला में किसानों को देते जानकारी। ● नईदुनिया

झलौन(नईदुनिया न्यूज)। किसान उपज की पैदावार और फसल में लगने वाले कीटों से हमेशा परेशान रहते हैं लेकिन अगर बीज शोधन कर बुवाई की जाए तो कीट और रोग लगने की आशंका कम हो जाती है। ग्राम धनगौर कला में मानव जीवन विकास समिति द्वारा आयोजित कार्यशाला में बीज शोधन की आसान विधियों की जानकारी दी। बीज शोधन विधि के बारे में ब्लाक समन्वयक नरेश खटीक ने बताया इस विधि से किसान अपनी उपज का पैदावार तो बढ़ा ही सकता है साथ में कीट और रोगों से 80 फीसदी तक बचाव किया जा सकता है। हर किसान को हर फसल लगाने से पहले बीज शोधन जरूर करना चाहिए। बीज शोधन विधि से बीज कैसे तैयार किया जाता है इसकी भी जानकारी किसानों को दी गई बीज शोधन विधि साथ-साथ जैविक खाद बनाने की विधि भी किसानों को बताई गई। कार्यक्रम निर्भय सिंह के मार्गदर्शन, परियोजना समन्वयक चंद्रपाल के सहयोग से किसानों को जैविक खेती के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से तेंदूखेड़ा ब्लाक के गांवों में आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर पर ब्लाक समन्वयक नरेश, भगवान सिंह लोधी, खिलान सिंह, विनीता दुबे की उपस्तिथि रही।

प्राकृतिक खेती के लिए किसानों को किया प्रेरित

बैठक में किसानों से जैविक खेती को लेकर भी की चर्चा

लोकोत्तर समाचार सेवा ■ दमोह
www.elokottar.in

तेंदूखेड़ा ब्लॉक के तिपनी डुक्करसता में एक बैठक आयोजित करते हुए किसानों से प्राकृतिक खेती और जैविक खेती को लेकर चर्चा की गई। और किसानों को जैविक खेती के प्रति प्रेरित किया गया जिसमें प्राकृतिक खेती के लिए जरूरी पशुपालन की जानकारी दी गई घनश्याम प्रसाद रैकवार ने बताया रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाइयां ना केवल फसलों को, जमीन को नुकसान पहुंचाती है बल्कि इंसानों के लिए भी घातक साबित हो रही है। ऐसे में हम सब के पास बेहतर विकल्प है प्राकृतिक खेती अपनाने का। एक देसी गाय से प्राकृतिक खेती शुरू की जाती है और जमीन की उर्वरा के साथ-साथ वस्तुओं की गुणवत्ता में भी सुधार लाया जा सकता है। इस अवसर पर आत्मा परियोजना अधिकारी सुधीर सिंह कृषि विस्तार अधिकारी डीपी दुबे वनरक्षक बृजेश कोल तिपनी आईसीआई फाउंडेशन सुधीर राय मानव जीवन विकास समिति कटनी परियोजना तेंदूखेड़ा पंचायत सहायक धन सिंह लोधी सहित तिपनी डुक्करस्त बगदरी राम के किसानों की उपस्थिति रही।

किसान उत्पादक संगठन की एक दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला संपन्न

लोकोत्तर समाचार सेवा ■ तेंदूखेड़ा/दमोह
www.elokottar.in

तेदूंखेडा मानव जीवन विकास समिति भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन के सहयोग से तेंदूखेड़ा दमोह में संचालित आजीविका परियोजना के तहत किसान उत्पादक संगठन की एक दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला आयोजित की गई कार्यशाला में तकनीकी, सहयोगी संस्था के एम एम कुमार व अरविन्द का रहा7 कार्यशाला में कुल 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया इस अवसर पर किसान उत्पादक संगठन के किसान एवं मानव जीवन विकास समिति के कार्यकर्त्ता की उपस्तिथि में परियोजना समन्वयक चंद्रपाल कुशवाहा और संस्था प्रमुख निर्भय सिंह की मौजूदगी में कार्यशाला में एम एम कुमार ने विस्तार से किसान उत्पादक संगठन के बारे में बताया कि कैसे हम किसान उत्पादक संगठन का गठन उसके कार्यो संगठन के विस्तार से जानकारी प्रदान की साथी संगठन से जुड़ने के किसानों को फायदे बताएं सबसे महत्वपूर्ण किसान बाजार पर अपनी निर्भरता को कम कर सकते है एवं सफल किसान उत्पादक संगठन हेतु क्या क्या रणनीति अपनानी चाहिए आदि बिन्दुओ पर विस्तार से प्रकाश डाला श्री एम एम कुमार के मार्गदर्शन आगामी चार महीनो कारी योजना बनाकर कार्यशाला संपन्न हुई इस अवसर पर चन्द्रपाल कुशवाहा, लालसिंह गोंड, परमसुख गोंड एवं राकेश ने एम एम कुमार, अरविन्द एवं निर्भय सिंह का धन्यवाद व आभार व्यक्त किया7 कार्यशाला का संचालन एवं प्रबंधन घनश्याम प्रसाद रैकवार, नरेश खटीक अजीत सिंह लोधी जी के द्वारा किया गया।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए महिलाएं मिलकर कर रही ऑर्गेनिक दवाइयां बनाने का प्रयास

लोकोत्तर समाचार सेवा ■ जबेरा/तेन्दूखेड़ा
www.elokottar.in

...जीवन विकास समिति उपलब्ध करवा रहे संसाधन खेती के प्रति महिलाओं का बढ़ रहा उत्साह ऑर्गेनिक दवाओं के उपयोग से कर ही खेती रसायनिक खाद और कीटनाशक दवाओं के प्रयोग का नुकसान उन्होंने स्वयं देखा है इनके प्रयोग से खेतों में प्राकृतिक के सहायक तमाम कीटाणु मर जाया करते थे मगर जब से जैविक खेती की शुरुआत हुई है अब ऐसा नहीं है जी हां हम बात कर रहे हैं। दमोह जिले के तेंदूखेड़ा जनपद से 27 किलोमीटर की दूरी पर बसा वनांचल गांव सेहरी पराहार के आदिवासी महिलाओं की जहां खेती से महिलाओं का सदैव सरोकार रहा है मगर वह निराई गुड़ाई और चारा पानी तक सीमित रही हैं मगर यहां की कुछ महिलाएं जो खेती में नायाब काम कर रही हैं यह महिलाएं जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक प्रयास से ऑर्गेनिक दवाइयां बनाने का काम कर रही हैं और जिनको संसाधन जुटाने में मानव जीवन विकास समिति मदद कर रही है घनश्याम प्रसाद रैकवार बताते हैं किसान भी वर्मी खाद वर्मी वाश के साथ भू नाडेप के माध्यम से वनस्पति का भी उपयोग समझकर अपना रहे हैं देवी एवं जय माता दी स्व सहायता समूह की महिलाएं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए गोमूत्र गोबर मठा को पहले गांव से एकत्रित करते हैं ऑर्गेनिक दवाएं बनाती हैं जिसका उपयोग प्राकृतिक खेती में करती हैं यह नायाब काम मगदुपरा तिपनी डुकरसता धनगौर रिचकुड़ी पटेरियामाल समदई सनाई माधो देवरी शंकर हर्रई बमनोदा की महिलाएं मिलकर कर रही हैं।

लोगों को प्राकृतिक खेती के लिए जागरूक कर रही समिति

दमोह ○ नवादैर

प्राकृतिक खेती के लिए बहुत आवश्यक है उपयुक्त व्यवस्थाओं का होना कहा निर्भय सिंह ने कि रसायनिक खेती के लिए जो किसानों को सहूलियत उपलब्ध है चाहे कीट नियंत्रण के लिए, पोषक प्रबंधन के लिए, खरपतवार नियंत्रण के लिए जिस वजह से किसान कई बार रसायनिक खेती के सभी दुष्परिणाम जानते हुए भी उस जाल में फस रहता है और जमीन को आवश्यक पोषक तत्व है भी तो नष्ट कर रहा है यदि जैविक और प्राकृतिक रूप से कीट नियंत्रण के लिए अच्छी गुणवत्ता के दवाएं उपलब्ध हो और पोषक प्रबंधन के लिए सहजता के साथ सामग्री उपलब्ध हो तो किसान प्राकृतिक खेती उतनी ही सहजता के साथ अपना सकता है जितना रसायनिक को अपना रहा है चन्द्रपाल कुशवाहा ने कहा कि दमोह जिला तेंदूखेड़ा विकासखंड के फुलर, सेहरी, ससनाकला, मगदुपुरा, धनगौर, रिचकुड़ी ग्राम में स्थापित सेहरी, पटेरियामाल, माधो, हर्रई जैव संसाधन केंद्र में अन्यास्त्र, मतास्त्र, लमित, नीमास्त्र, फूल वर्धक, जैसे प्राकृतिक कीटनियंत्रक तैयार किए जाते है और जैविक खाद तैयार कर गुणवत्ता के साथ किसानों को उपलब्ध कराए जाते हैं जिससे किसानों का जुड़ाव भी बढ़ता है और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलता है। घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि अनुसूचित जनजाति और अन्य परम्परागत वन निवासी वन अधिकारों की मान्यता अधिनियम 2006-2007 एवं 2008 संशोधित नियम 2012 के तहत लोगों को प्राप्त वन भूमि पर गैर कीटनाशी प्रबंधन के तहत कर रहे हैं कृषि कार्य एनजीओ की इस पहल से किसान विभिन्न फसलों में जैविक खेती में सक्षम हो रहे हैं और सहजता के साथ बिना किसी आर्थिक नुकसान के सफलता के साथ उत्पादन ले पा रहे हैं।

मानव जीवन विकास समिति कटनी-दमोह और संस्थाओं-संगठनों के साथ इंटरफेस बैठक

ग्राम पंचायतों में आजीविका बढ़ाने और किसानों की आय बढ़ाने के मुद्दे पर किया गहन विचार विमर्श

[illegible], दमोह ○ नवादैर

मानव जीवन विकास समिति कटनी भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन जिला दमोह मध्य प्रदेश की जनपद पंचायत तेंदूखेड़ा की ग्राम व ग्राम पंचायतों में आजीविका [illegible] कृषि आधारित गैर कृषि आधारित लोगों को लोगों के साथ किसानों की आय दोगुनी करने के साथ आर्थिक स्थिति मजबूत करना है। इसी उद्देश्य को लेकर कृषि विज्ञान केन्द्र दमोह मध्य प्रदेश मानव जीवन विकास समिति कटनी दमोह द्वारा सरकारी गैर सरकारी विभागों के साथ इंटरफेस बैठक का आयोजन किया गया कृषि विज्ञान केन्द्र दमोह के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मनोज कुमार अहिरवाल जी ने कहा कि प्राकृतिक खेती के सिद्धांत देशी गाय पर आधारित है, देशी गाय के एक ग्राम गोबर में 300 से 500 करोड़ तक सूक्ष्म जीवाणु होते हैं, जबकि विदेशी गाय के एक ग्राम गोबर में केवल 78 लाख सूक्ष्म जीवाणु पाए जाते हैं। देशी गाय के गोबर एवं मूत्र की महक से देशी केंचुए भूमि की सतह पर आ जाते हैं। और भूमि को उपजाऊ बनाते हैं बी.एल. साहूजी ने कहा कि मिट्टी की जांच करवाना किसानों के लिए अति आवश्यक है मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनवाने से पता चलता है कि भूमि में कौन से पोषक तत्वों की कमी है भूमि में इस समय में भूमि पर के हिसाब रसायनिक खादों और दवाईयों का उपयोग करते है जो हानिकारक है डॉ. राजेश कछवे ने कहा कि पेड़ पौधों की वृद्धि और उनसे अच्छा उत्पादन लेने के लिए जिन जिन संसाधनों की जरूरत होती है, उन सभी संसाधनों को पौधों को उपलब्ध कराने के लिए प्रकृति को स्वस्थ करना प्राकृतिक कृषि कहलाती है। दुबेजी ने कहा कि प्राकृतिक कृषि में गहरी जुताई नहीं की जाती है क्योंकि यह भूमि की उपजाऊ शक्ति को कम कर देती है 36 डिग्री तापमान होते ही भूमि से कार्बन उठना शुरू हो जाता है। ह्यूमस की निर्माण क्रिया रुक जाती है जिसके कारण भूमि की उपजाऊ शक्ति कम हो जाती है डॉ. राजेश कछवे ने कहा कि गोबर खाद से नाडेप खाद एवं केंचुआ खाद बनाने और मौसम विभाग द्वारा दी जा रही जानकारी के साथ आगे बढ़े किसान भाई कार्यक्रम का संचालन घनश्याम प्रसाद रायकवार ने किया।

मानव विकास समिति और आजीविका मिशन द्वारा रोजगार के अवसरों पर दौरा

दैनिक पुनीत वार्ता जिला ब्यूरो दमोह लक्ष्मण रैकवार

तेदूखेडा/ मानव जीवन विकास समिति दमोह भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन के सहयोग से जिला दमोह मध्य प्रदेश की जनपद पंचायत तेदूखेडा कि ग्राम व ग्राम पंचायतों में लोगों की आजीविका को लेकर नवांचार किये जा रहे हैं आजीविका मिशन द्वारा गाँव गाँव बनवाये गये महिला समूह जो निष्क्रिये कि प्रक्रिया में चल रहे हैं उन्हें पुर्नजीवित कर उन्हें पुनः आजीविका मिशन से जोडा जा रहा है तथा मानव जीवन विकास समिति दमोह के पंचायत सहायक कार्यकर्ताओ कमुनिटिइंजिनियर साथी उक्त गतिविधियों को आगे बढा रहे हैं ब्लॉक समनब्यक घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि महिलाओं के नये / पूर्व के समूह बनाकर आजीविका मिशन से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा ऐसे ही समूह अंचल पुरा, ओरिया माल. डुकरसता. धनेटा. बिशनाखेडी. ससनाखुर्द बमनोदा .समदई. पटेरियामाल. धनगौर कला बम्होरी पांजी. रिचकुढी. महगुवां कला .जामुन. चंदना. हर्रई. पलवा. सेहरी.ससनाकला. झलोन. तिपनी. में महिलायें आपस में बैठकर आगे बढने के लिए जैविक दवाईयां जैविक खाद बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं

महिलाएं आजीविका से जुड़ने कर रही प्रयास

भास्कर न्यूज। तेदूखेड़ा

मानव जीवन विकास समिति दमोह भारत रूरल फाउंडेशन के सहयोग से जिला दमोह की जनपद पंचायत तेदूखेड़ा के ग्राम व ग्राम पंचायतों में लोगों की आजीविका को लेकर नवांचार किए जा रहे हैं। आजीविका मिशन द्वारा गांव-गांव बनवाए गए। महिला समूह जो निष्क्रिय कि प्रक्रिया में चल रहे हैं, उन्हें पुर्नजीवित कर उन्हें पुनः आजीविका मिशन से जोड़ा जा रहा है तथा मानव जीवन विकास समिति दमोह के पंचायत सहायक कार्यकर्ताओ साथी उक्त गतिविधियों को आगे बढ़ा रहे हैं। ब्लॉक समन्वयक घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि महिलाओं के नये व पूर्व के समूह बनाकर आजीविका मिशन से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे ही समूह अंचल पुरा, ओरिया माल, डुकरसता, धनेटा, बिशनाखेड़ी, ससनाखुर्द, बमनोदा, समदई, पटेरियामाल, धनगौर कला, बम्होरी पांजी, रिचकुढ़ी, महगुवां कला, जामुन, चंदना, हर्रई, पलवा, सेहरी, ससनाकला, झलोन, तिपनी में महिलायें आपस में मिलकर आगे बढ़ने के लिए जैविक दवाईयां जैविक खाद बनाने के प्रयास किये

गाय के गोबर से जैविक खाद बनाने के तरीके बताए

भास्कर संवाददाता | तेंदूखेड़ा/झलोन

ग्राम बमनौदा में एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति की ओर से ग्राम विकास समितियों का दो दिवसीय प्रशिक्षण हुआ। जिसमें घनश्याम प्रसाद रायकवार ने लोगों को गांव में कृषि आधारित गैर कृषि आधारित के साथ प्राकृतिक खेती गाय गोबर के माध्यम से जैविक खाद्य, जैविक दवाई, बनाने के हुनर बताए। साथ ही उपजाऊ भूमि को बंजर होने से बचाना है, रसायनिक खाद्य और दवाईयों से फसलों की उर्वरक पोषण देने वाले जीव नष्ट हो रहे हैं, हमें मात्र भूमि को बचाना है, हमारे पूर्वज गाय गोबर की खेती करते थे, जिससे भूमि में नमी रहती थी, लेकिन वर्तमान खेती से भूमि ठोस हो रही है, जिससे हमारे जीवन पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, कार्यशाला में ग्राम पंचायत बमनोदा सरपंच कुशुम रानी ने लोगों से कहा कि एक मां हमें पैदा कर भूमि पर चलने फिरने और आजीविका चलाने के लिए छोड़ देती है, दूसरी मां भूमि है, जो जीवन भर अच्छे कर्म बुरे कर्म मनुष्य जमीन पर करते हैं, लेकिन मात्र भूमि कुछ नहीं कहती है, वह समस्त प्रहार सहती है, हम सबका कर्तव्य है कि मात्र भूमि और जन्म देने वाली मां की रक्षा करें।

जैविक आधारित खेती की दे रहे जानकारी

तेंदूखेड़ा। मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से निर्भय सिंह के मार्गदर्शन में जनपद पंचायत तेदूखेड़ा के गांव व ग्राम पंचायतों में किसान संगोष्ठियां, सभाएं आयोजित कर किसानों को गैर कीटनाशी प्रबंधन और रसायनिक खेती के लाभ और दुष्परिणामों के संबंध जानकारी दी जा रही है। ब्लॉक समवंयक घनश्याम प्रसाद रायकवार ने किसानों को बताया कि बीज शोधन, बीज उपचार और गैर कीटनाशी प्रबंधन पद्धति से खेती करने के लिए अति आवश्यक है कि गहराई के साथ इसमें अपनाई जाने वाली गतिविधियों को समझा जाए फसल में आने वाली कीट व्याधि विभिन्न प्रकार के रोगो को रसायनिक कीटनाशी दवाओं के उपयोग के बिना ही नियंत्रित करना, गैर कीटनाशी प्रबंधन कहलाता है। साथ ही इसमें आवश्यक है कि खरपतवार नियंत्रण जैसी गतिविधियों में किसी प्रकार के रसायन का उपयोग नहीं करना चाहिए।

समिति लोगों को जागरूक करने का कार्य कर रही है: रायकवार

तेंदूखेड़ा। सरकारी विभागों के साथ मानव जीवन विकास समिति दमोह की बैठक को संबोधित करते अतिथि।

भास्कर संवाददाता | तेंदूखेड़ा

मानव जीवन विकास समिति ने जनपद पंचायत सभागार में ब्लॉक स्तरीय कर्मचारियों की बैठक आयोजित की। जिसमें भारत रुरल लाइवलीहुड फाउंडेशन दिल्ली के सहयोग से घनश्याम प्रसाद रायकवार ने संबोधित किया। उन्होंने बताया कि बैठक का मुख्य उद्देश्य समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के साथ प्राकृतिक खेती पशुपालन जल संरक्षण व सरकारी योजनाओं को लेकर मानव जीवन विकास समिति पिछले 22 वर्षों से लोगों को जागरूक करने का कार्य कर रही है। समिति सचिव निर्भय सिंह ने कहा कि संस्था का उद्देश्य है कि कृषि को लाभ का धंधा कैसे बनाया जाए। जिससे खेती में कम लागत में अधिक उत्पादन के साथ किसानों की आय दोगुनी करना है। डॉ. हरिकांत बिलवार ने कहा कि भारत सरकार राज्य सरकार पशुपालकों के लिए ढेर सारी योजनाएं संचालित किए हैं पशुपालन एवं डेयरी विकास के माध्यम से पशुओं का बीमा पशुपालक के लिए लोन किसानों के लिए है। एलबी दास ने कहा कि हम गांव में आजीविका चलाने के लिए मेंढबंदी कुआं निर्माण कराते हैं। जनभागीदारी से सरकार ने योजना चलाई है जन्म से लेकर मृत्यु तक के लिए आजीविका मिशन से हेमंत ने कहा कि गांव गांव में एसआरएलएम के सहयोग से महिला स्वयं सहायता समूह बनाए गए हैं। उन समूह की बहनों के लिए छोटे छोटे धंधों के लिए बैंक से लिंक कराकर महिलाओं लोन दिलाने का कार्य किया जा रहा है। जन अभियान परिषद विकासखंड समन्वयक अर्गल ने कहा कि जन अभियान परिषद ग्राम विकास प्रस्फुटन समितियों के माध्यम से वहीं कार्य कर रही हैं जो मानव जीवन विकास समिति दमोह कर रही है। जिला पंचायत सदस्य बबीता सिंह पोर्ते सहित अन्य सदस्यों ने अपने विचार रखे।

कृषि विज्ञान केन्द्र दमोह जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के द्वारा महिला कृषक को मिला प्रशस्ति पत्र

लोकोत्तर समाचार सेवा ■ दमोह
www.elokottar.in

मानव जीवन विकास समिति दमोह पंचायत सहायक कार्यकर्ता एवं कृषक श्रीमति मिलन बाई गौड ग्राम ढोणा तहसील तेदूखेडा जिला दमोह मध्य प्रदेश वर्ष 2022-2023 में जैविक एवं प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में नवांचार कार्य हेतु सराहना की जाती है कृषि विज्ञान केन्द्र दमोह प्रबंधक डा. मनोज कुमार अहिरवाल ने कहा कि प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में सराहनीय कार्य हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जाता है कृषि विज्ञान केन्द्र दमोह इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है कृषि विज्ञान केन्द्र दमोह बी.एल. शाहू जी ने कहा कि भारत वर्ष सदैव से कृषि ओर कृषि प्रधान राष्ट्र रहा है इस राष्ट्र की आर्थिक एवं मानव जीवन को संरचना केन्द्र बिंदु गौ आधारित रहा है इसे सुरक्षित ओर संरक्षित करने की जिम्मेदारी अब हमारी है घनश्याम प्रसाद रायकवार का कहना है कि जल जंगल ओर जमीन आधारित कृषि से प्राकृतिक खेती संभव है।

श्रमदान कर खोदे कुएं अब मिल रहा पर्याप्त पानी

भास्कर न्यूज। तेंदूखेड़ा

नौरादेही वन्यजीव अभ्यारण्य के ग्राम भैंसा, सरसैलामाल में मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से रतन सिंह गौड़ जनपद पंचायत तेंदूखेड़ा द्वारा अन्य ग्रामीणों के सहयोग से श्रमदान कर पानी की समस्या का समाधान कराने के लिए कुआं खोदा। जिसमें अप्रैल में ही पर्याप्त पानी है और ग्रामीणों को भी सुविधा मिलने लगी है। ग्रामीणों ने बताया कि किसानों के लिए सिंचाई की सुविधा तो हुई ही है। साथ में वनांचल गांव में पेयजल उपलब्ध हुआ है। पशु-पक्षियों के लिए भी पीने के लिए जल उपलब्ध हुआ है। ये सब हुआ समिति के सहयोग से। टेक सिंह गौड़ ने बताया कि पहले गांव में गर्मियों में पानी की परेशानी होती थी। मानव जीवन विकास समिति कटनी के कार्यकर्ता घनश्याम प्रसाद रायकवार ने हम लोगों को सामूहिक श्रमदान कर कुआं खोदने के लिए कहा। उनके द्वारा दी गई प्रेरणा के बाद सभी ने मिलकर दो कुआं खोदने का निर्णय लिया। दोनों कुआं खोदने के बाद पत्थरों से उनको बांधा। आज हम लोग गर्मियों में पानी पीते हैं और पशु पक्षियों को भी पेयजल उपलब्ध हो रहा है। 15 किसानों की 78 एकड़ भूमि सिंचित हो रही हैं।

ससनाखुर्द में श्रमदान से बनाया गया तालाब, सहजता से उपलब्ध होगा पानी

दमोह। एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति दमोह मध्य प्रदेश के सहयोग से श्रमदान आधारित तालाब का निर्माण किया गया ससनाखुर्द में पेयजल एवं समुदायिक निस्तार के लिए जल की उपलब्धता नहीं है एकता ग्राम विकास समिति ससनाखुर्द के मुखियाओं ने सामूहिक मीटिंग कर निर्णय लिया कि एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति का आर्थिक सहयोग हो जाये तो हम लोग श्रमदान करके तालाब का निर्माण करेंगे समिति सचिव श्री निर्भय सिंह जी के सामने यह बात गाँव के लोगों ने सामूहिक मीटिंग में रखी निर्भय भाई जी ने कहा कि यह आदिवासी बाहुल्य ग्राम ससनाखुर्द में न सिंचाई के लिए कोई साधन है ओर न पशुओं के लिए पीने के लिए पानी नहीं है इसलिए संस्था श्रमदान आधारित तालाब का निर्माण कराने का प्रयास करेंगी जिसमें सभी गाँव के लोग श्रमदान करेंगे जिससे जल संरक्षण के साथ 11 कुआँ ओर 03 बोर रीचार्ज होने के साथ 94 एक भूमि सिंचित होगी ओर संस्था ने इसी उद्देश्य को लेकर वन अधिकार पत्र पर प्राप्त वन भूमि किसान हरी सींग हल्ले सींग गौड़ के खेत में तालाब का निर्माण कराया गया।

वनमित्र पोर्टल की सुस्त चाल से निराश आदिवासी

● रुबी सरकार

तेंदूखेड़ा विकासखंड जिला दमोह से करीब 28 किलोमीटर फुलर वनग्राम का रहने वाला रामचरण गोंड आदिवासी को वर्ष 2011-12 से वन अधिकार समिति की ओर से 9 एकड़ कृषि भूमि और आवास का पट्टा मिला। हालांकि रामचरण का इस भूमि पर तीन पीढ़ी से कब्जा है। लेकिन पट्टा न होने के कारण वन विभाग अतिक्रमणकारी बताकर हर साल जुर्माना वसूलते रहे। पट्टा मिलने के बाद रामचरण को लगा उसकी परेशानी खत्म हो गई, लेकिन ऐसा कुछ भी उसके साथ नहीं हुआ । रामचरण को अतिक्रमणकारी बताकर वन विभाग ने उन पर मुकदमा चलाया, रामचरण और उनके बेटों को जेल भेजा गया। आज भी वह जमानत पर हैं। इसके बाद मध्यप्रदेश शासन की ओर से 2019-20 में वन मित्र पोर्टल शुरू किया गया। रामचरण से कहा गया कि वे वनमित्र पोर्टल पर इसी जमीन के पट्टे के लिए आवेदन करे। उन्होंने आवेदन किया , परंतु आज तक उस आवेदन पर कोई फैसला नहीं हुआ। ताज्जुब इस बात की है कि इसी भूमि को राजस्व विभाग अपनी भूमि बताकर रामचरण से हर साल कभी तीन हजार, कभी दो हजार और कभी एक हजार रुपए जुर्माना वसूल रहा है। रसीद दिखाते हुए रामचरण ने बताया, ऐसी अंधेरगर्दी कहीं देखी है क्या! जिस भूमि पर तीन पीढ़ी से रह रहे है, खेती कर रहे हैं। बाद में उसी भूमि का वनाधिकार समिति ने पट्टा दे दिया। फिर भी सालों साल मुझसे जुर्माना वसूला जा रहा है। यहां तक कि इसी जमीन पर कब्जे को लेकर जबलपुर हाईकोर्ट में मेरी तरफ से दायर याचिका लंबित है। फिर भी मुझे जंगल से भगाने की नाकाम कोशिश हो रही है। यह अकेले रामचरण का प्रकरण नहीं है, बल्कि इसी जिले के 12 हजार,600 आदिवासियों की यही कहानी है। लगभग सभी आदिवासी सदियों से वन भूमि पर रहते आ रहे हैं। वनाधिकार कानून बनने के बाद 2006 से अपने कब्जे की भूमि पर वन अधिकारी समिति की ओर से पट्टा अनिवार्य किया गया। फिर शासन ने वर्ष 2019-20 में वनमित्र पोर्टल शुरू कर कब्जे वाली भूमि के लिए पुनः ऑनलाइन आवेदन मांगा, लेकिन वनमित्र पोर्टल पर आवेदन करने वाले आदिवासियों में से कुछ का ही भूमि का मसला हल नहीं हुआ।

फुलर गांव में 165 आदिवासी परिवार निवास करते हैं। इसी गांव का सेवालाल गोंड बताते हैं कि वह 1980 से इसी जंगल में रह रहे हैं। सेवालाल ने बताया कि आदिवासियों को केवल वोट बैंक समझकर राजनेता इस्तेमाल करते हैं। हर बार जमीन , रोजगार देने की बात करते हैं, परंतु देते कुछ नहीं। हमारी परिस्थिति जस की तस है। सेवालाल के पास भी पट्टे और कब्जे की रसीद है। फिर भी वनमित्र पोर्टल पर ओवदन के लिए कहा गया। उन्होंने आवेदन किया, पर नतीजा सिफर रहा। अभी तक उसके पास कार्यवाही की कोई सूचना नहीं आई है।

दमोह के सामाजिक कार्यकर्ता घनश्याम रैकवार बताते हैं कि दरअसल यह पूरा गांव 2000 से पहले अपनी आजीविका के लिए पलायन पर जाते थे। तत्कालीन मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने जंगल में आदिवासियों के रहने और कृषि के लिए पट्टे देने की व्यवस्था शुरू की । फिर 2006 में वनाधिकार कानून आया , पुनः कब्जे वाली जमीन पर पट्टे के लिए वन अधिकार समिति के पास आदिवासियों को आवेदन देने के लिए कहा गया। समिति की ओर से आदिवासियों को पट्टा भी मिल गया, अब फिर से शासन की ओर से कहा जा रहा है कि वनमित्र पोर्टल पर पट्टे के लिए आवेदन देना होगा। जबकि दमोह जिले के 12 हजार से अधिक आवेदन लंबित हैं। इसके लिए हम सब संघर्ष कर रहे हैं। कलेक्टर के यहां धरना से लेकर मंत्रियों तक घेराव कर रहे हैं, ताकि कोई तो ठहर कर हमारी परेषानी सुन लें। उन्होंने एक जानकारी और दी कि आदिवासियों की आजीविका के लिए 1976 में अधिक अन्न उपजाओ योजना अंतर्गत कृषि सहकारी समिति बनाई गई थी, इस समिति में आदिवासियों के अलावा अनुसूचित जाति के लोगों को भी शामिल किया गया था, समिति से जुड़े 26 परिवारों की आजीविका इसी कृषि भूमि पर निर्भर थी । अचानक 1996 में इसे निरस्त कर दिया गया। इस तरह कृषि सहकारी समिति की भूमि पर वन विभाग ने कब्जा जमा लिया और इस भूमि से आदिवासियों को भगाना शुरू कर दिया।

गौरतलब है कि दमोह जिला चारों ओर जंगलों से घिरा है । इन जंगलों में 56 हजार आदिवासी निवास करते हैं। रायकवार ने बताया वर्ष 2008 से 2017 तक केवल तीन हजार हक प्रमाण पत्र ही आदिवासियों को वितरित किए गए । वर्ष 2019-20 में एमपी वनमित्र पोर्टल पर 12 हजार ,600 आवेदन दर्ज हुए। अभी तक मात्र 411 हीक प्रमाण पत्र ही आदिवासियों को दिए गए।

आजीविका आधारित महासम्मेलन का हुआ समापन

वन अधिकार कानून से अजीविका खड़ी हुई, वंचितों को भी मिलेगा लाभ

दमोह। एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति कटनी दमोह मध्य प्रदेश के द्वारा आजीविका आधारित महासम्मेलन का आयोजन 10 मार्च 2023 ग्राम पंचायत [illegible]

प्राकृतिक कृषि के सिद्धांत पर किसानों के खेतों का भ्रमण

तेन्दूखेड़ा। जनपद पंचायत तेदूखेड़ा जिला दमोह के ग्राम व ग्राम पंचायतों में मानव जीवन विकास समिति द्वारा किसानों को नवाचारों के माध्यम से प्राकृतिक खेती के विषय में जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। निर्भय सिंह ने कहा कि भूमि अन्नपूर्णा है फसलों को बढ़ाने के लिए जो संसाधन चाहिये। भागवत कुमार अहिरवाल भोपाल ने कहा कि ऊपर से कुछ भी देने की जरूरत नहीं है, हमारी फसलें भूमि से मात्र 1.5 से 2.0 प्रतिशत तत्व लेती है। शेष 98 प्रतिशत हवा सूरज की रोशनी और पानी से लेती है।

जैविक खाद एवं जैविक दवाईयों से सुधरेगी उन्नत कृषि उपज

कटनी, देशबन्धु। मानव जीवन विकास समिति द्वारा सूक्ष्म उद्यम विकास कार्यक्रम के तहत नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक) के सहयोग से एनआरएलएम (राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन) द्वारा गठित समूह की महिलाओं का जैविक खाद एवं जैविक कीटनासी प्रबंधन को लेकर पठरा ग्राम पंचायत मे स्व-सहायता समूह की 30 महिलाओं का प्रशिक्षण आयोजित है। प्रशिक्षण का आयोजन संस्था प्रमुख श्री निर्भय सिंह, नाबार्ड से डीडीएम धनेष जी, एनआरएलएम से राम सुजान एवं सूर्य प्रताप सिंह बघेल के सहयोग से पठरा स्थित गौ-शाला मे प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है।

आपको यह बताते हुए खुशी हो रही है कि गौ-शाला को संचालित कर रहे स्व-सहायता समूह को यह प्रशिक्षण बहुत ही कारगर सिद्ध होगा। यह की प्रशिक्षण मे जैविक खाद के साथ साथ जैविक दवाईयां बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण रोजाना अपने माड्यूल के अनुसार परिवर्तनशील है। प्रशिक्षण का शुभारम्भ पठरा ग्राम पंचायत भवन मे हुआ कार्यक्रम मे 4 स्व-सहायता समूह से लगभग 35 महिला सदस्यों ने भाग लिया। संस्था प्रमुख निर्भय सिंह, प्रशिक्षक श्रीमती मिलन धुर्वे एवं लाल सिंह (विशेषज्ञ जैविक कीटनासी प्रबंधन), संस्था कार्यकर्ता श्री रामकिशोर चौधरी, चंद्रपाल कुशवाहा, अभय कुमार पटेल, श्रीमती राधिका तिवारी, सरपंच, सचिव, रोजगार सहायक सहित अन्य सहयोगियों की भूमिका रही।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्धेष्य जैविक खेती की उपयोगिता एवं रासायनिक खेती के दुष्परिणाम बताते हुए जैविक खेती को बढ़ावा देने नाडेप, भू-नाडेप, हरी खाद, कम्पोस्ट खाद, वर्मी कम्पोस्ट खाद, सुपर कम्पोस्ट खाद तैयार करने प्रयोग विधि बताई गई। गैर कीटनासी प्रबंधन की उपयोगिता पर प्रभाव डाला गया। कीटनासी प्रबंधन पर अग्निआस्त्र, नीमास्त्र तैयार करने प्रयोग विधि बताई गई। इसके बाद आगामी दिनों मे माड्यूल के आधार पर कार्यक्रम परिवर्तशील रहेगा।

महिलाओं ने प्रदर्शित किया जैविक दवाइयां व खाद

कटनी @ पत्रिका. मानव जीवन विकास समिति द्वारा सूक्ष्म उद्यम विकास कार्यक्रम के तहत नाबार्ड राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के सहयोग से राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा गठित समूह की महिलाओं को जैविक खाद एवं जैविक कीटनाशी प्रबंधन को लेकर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। पठरा ग्राम पंचायत में स्व. सहायता समूह की 30 महिलाओं का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण का आयोजन संस्था प्रमुख निर्भय सिंह, नाबार्ड से डीडीएम धनेश, एनआरएलएम से राम सुजान द्विवेदी, सूर्य प्रताप सिंह बघेल के सहयोग से पठरा स्थित गौ-शाला मे प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। समापन समारोह में नाबार्ड से डीडी एम, आरसेटी डायरेक्टर, एलडीएम, डी आई, समिति सचिव निर्भय सिंह, समिति कार्यकर्ता रामकिशोर चौधरी, चंद्रपाल कुशवाहा, पठरा से सुरेश विश्वकर्मा, गणेश विश्वकर्मा, विकास यादव, दीपक, मिहीलाल आदि उपस्थित थे।

30 महिलाओं को दिया जा रहा 15 दिवसीय प्रशिक्षण

अब ग्रामीण समूह की महिलायें बनेंगी आत्मनिर्भर

पीसं, कटनी। मानव जीवन विकास समिति द्वारा सूक्ष्म उद्यम विकास कार्यक्रम के तहत नाबार्ड के सहयोग से एनआरएलएम द्वारा गठित समूह की महिलाओं का जैविक खाद एवं जैविक कीटनाशी प्रबंधन को लेकर पठरा ग्राम पंचायत मे स्व-सहायता समूह की 30 महिलाओं का प्रशिक्षण आयोजित है। प्रशिक्षण का आयोजन संस्था प्रमुख निर्भय सिंह, नाबार्ड से डीडीएम धनेष, एनआरएलएम से राम सुजान एवं सूर्य प्रताप सिंह बघेल के सहयोग से पठरा स्थित गौ-शाला मे प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। गौ-शाला को संचालित कर रहे स्व-सहायता समूह को यह प्रशिक्षण बहुत ही कारगर सिद्ध होगा। प्रशिक्षण में जैविक खाद के साथ साथ जैविक दवाईयां बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण रोजाना अपने माड्यूल के अनुसार परिवर्तनशील है। प्रशिक्षण का शुभारम्भ पठरा ग्राम पंचायत भवन मे हुआ। कार्यक्रम में 4 स्व-सहायता समूह से लगभग 35 महिला सदस्यों ने भाग लिया। संस्था प्रमुख निर्भय सिंह, प्रशिक्षक मिलन धुर्वे एवं लाल सिंह विशेषज्ञ जैविक कीटनाशी प्रबंधन, संस्था कार्यकर्ता रामकिशोर चौधरी आदि की भूमिका रही।

त्रिस्तरीय पंचायत राज व्यवस्था बेहतर रूप से लागू हो: घनश्याम

इंटरफेस की बैठक में दी महात्वपूर्ण जानकारी

बनवार| बैठक में महात्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा करते अधिकारी।

भास्कर संवाददाता | बनवार

मानव जीवन विकास समिति कटनी जिला दमोह इंटरफेस बैठक का आयोजन ग्राम पंचायत दुगानी ब्लॉक जबेरा में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सरपंच साधना सींग गौड़ ने की। निर्भय सिंह के मार्गदर्शन में परियोजना राधिका तिवारी ने कहा कि जनपद पंचायत जबेरा की 7 पंचायत 25 गांव में लोगों की आजीविका खड़ी हो, गांव में कृषि आधारित गैर कृषि आधारित प्राकृतिक खेती के साथ शासन की योजनाओं को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास ग्राम पंचायतों सरकारी विभागों के साथ मिलकर किया जा रहा है। घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि लोगों को लोगों के साथ ग्रामीण अंचलों के किसानों की आर्थिक स्थिति और समृद्धि सामाजिक सशक्तिकरण तथा समग्र विकास के लिए यह आवश्यक है कि त्रिस्तरीय पंचायत राज व्यवस्था बेहतर रूप से लागू हो। पंचायतें मजबूत प्रजातंत्र की बुनियाद हैं लोकतंत्र की इस आधार भूत कड़ी से हमें गांव क्षेत्र जिला का सर्वांगीण विकास की दिशा तय करनी है। सही लोकतांत्रिक प्रक्रिया से चुने गए पंचायत राज प्रतिनिधियों से प्रजातंत्र की इस कढ़ी को मजबूती मिलती है। इसी उद्देश्य को लेकर बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में लोगों को समिति समन्वयक ने जानकारी देते हुए बताया कि समिति द्वारा पशु पालन, समिति किसानों को भू-नाडेप बनवाने, बर्मी बैड लगवाना और भरवाना, अजोला डेमो निर्माण, जैविक दवाइयां बनवाने के ट्रेनिंग गांव घर पर किसानों को दे रहे हैं। राकेश विश्वकर्मा ने कहा कि समूहों के साथ मिलकर गोबर युक्त स्वरोजगार के लिए प्रेरित कर रहे हैं। बैठक में रोजगार सहायक रंजीत शाहू, माधव सिंह लोधी, संजीत कुमार शाहू, सावित्री गौड़, जगदीश सिंह, राजूसींग गौड़, देवेंद्र गौड़, कमलारानी शामिल रही।कार्यक्रम का संचालन चरन सींग ने किया। आभार हरीबाई ने माना।

समिति ने किसानों को बताए जैविक खेती के फायदे

झलौन। तेंदूखेड़ा ब्लाक की ग्राम पंचायत वगदरी के गांव डुकरसता में मानव जीवन विकास समिति कटनी के सदस्यों ने किसानों को जैविक खेती के बारे में बताया। जिसमें किसान बाबूलाल गौड़ के साथ अन्य किसान जैविक खेती करते हैं और तरह-तरह की देशी दवाई बनाते हैं और अपने किचन, गार्डन के साथ चना और अन्य फसलों में दवाई का छिडकाव करते हुए घर में भूनाडे और वर्मी वेड तैयार किया है जिसे केंचुआ खाद भी कहते हैं जिससे खेती को काफी फायदा पहुंचता है इसमें रासायनिक खाद का उपयोग नहीं होता है। इस मौके पर ग्राम पंचायत वगदरी पंचायत सहायक धन सिंह लोधी, राम, कृष्णा, मेघराज, बाबूलाल सहित अन्य की मौजूदगी रही।-नप्र

मानव जीवन विकास समिति का संयुक्त प्रशिक्षण शिविर संपन्न

रबी फसलों के उत्पादन एवं सब्जी उत्पादन तकनीक की दी जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कटनी

कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ ए.के तोमर के मार्ग निर्देशन में एवं कृषि वैज्ञानिक डॉ आर के मिश्रा,डॉ आर पी बैन, डॉ अर्पिता श्रीवास्तव,डॉ के पी द्विवेदी श्री संदीप चंद्रवंशी तथा प्रियंका धुर्वे एवं मानव जीवन विकास समिति के संचालक निर्भय सिंह उपस्थित थे। मंगलवार को कृषि विज्ञान केंद्र एवं मानव जीवन विकास समिति (एनजीओ) जिला कटनी के संयुक्त सौजन्य में प्राकृतिक खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक के प्रमुख डॉ ए के तोमर ने खेती को लाभ का धंधा बनाने हेतु रबी फसलों के उत्पादन तकनीकी एवं सब्जी उत्पादन तकनीक की विस्तृत जानकारी दी। केंद्र के वैज्ञानिकों ने प्राकृतिक खेती की विभिन्न तकनीकी जीवामृत बीजामृत ब्रह्मास्त्र बनाने की संपूर्ण तकनीकी एवं उसको उपयोग करने की विधि पर प्रशिक्षण दिया साथ ही वैज्ञानिकों ने खेती को लाभ का धंधा बनाने हेतु कम पानी चाहने वाली फसलों के बोने की सलाह दी एवं उनके प्रबंधन की तकनीकी पर प्रशिक्षण दिया। वैज्ञानिकों ने खेती के साथ-साथ सब्जी उत्पादन, पशुपालन,मुर्गी पालन एवं इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम अपनाने की किसानों को सलाह दी ।यह कार्यक्रम मानव जीवन विकास समिति के माध्यम से आए हुए किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण दिया। जिसमें किसानों की संख्या 45 थी आज का प्रशिक्षण एवं कार्यशाला बहुत ही सारगर्भित रही किसानों ने वैज्ञानिकों द्वारा दी गई कृषि तकनीकों को अपनाने का संकल्प लिया और हमेशा वैज्ञानिक खेती करने को स्वीकार किया अंत में कृषक एवं मानव जीवन विकास समिति के अध्यक्ष श्री निर्भय सिंह ने वैज्ञानिक को धन्यवाद दिया

आंगनबाड़ी केंद्रों को गोद लेने जनप्रतिनिधि व सामाजिक संगठनों ने दिखाई रुचि

कटनी @ पत्रिका. जनप्रतिनिधि, स्वयंसेवी एवं सामाजिक संगठनों और नागरिकों ने आंनबाडी केंद्रों को गोद लेकर जरूरी संसाधनों के विकास में रुचि दिखाई है। शासन-प्रशासन की पहल पर लोग बच्चों के लिए हाथ आगे बढ़ा रहे हैं। कलेक्टर अवि प्रसाद ने आंगनबाड़ी केंद्रों में सभी संस्थानों के विकास के लिए आंगनबाड़ी केंद्रों को गोद लेने समाज के सभी वर्गों के लोगों को आगे आने को कहा है। जिला कार्यक्रम अधिकारी नयन सिंह ने बताया कि महिला एवं बाल विकास विभाग की महत्वपूर्ण योजना एडॉप्ट एन आंगनवाड़ी के अंतर्गत प्रथम चरण में जनप्रतिनिधियों, स्वयं सेवी संस्थाओं, शासकीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा आंगनवाड़ी केंद्रों को गोद लेकर विभिन्न कार्य केंद्रों को व्यवस्थित कराने कराए गए हैं.द्वितीय चरण में बहोरीबंद विधायक प्रणय पाण्डेय, जिला पंचायत सदस्य रीना लोधी, जिला पंचायत सदस्य प्रदीप त्रिपाठी ने बहोरीबंद के एक-एक आंगनवाड़ी केन्द्र को गोद लेने की सहमति दी हैं। जिला पंचायत उपाध्यक्ष अशोक विश्वकर्मा द्वारा मुड़वारा विकासखण्ड के आंगनवाड़ी केन्द्र गोद लेने की सहमति दी हैं। बड़वारा विकासखण्ड में मानव जीवन विकास समिति के सचिव निर्भय सिंह ने 9 आंगनवाड़ी केन्द्र गोद लेने की सहमति दी हैं। विजोरी, जमुनिया, भदौरा, पौंड़ी, बंदरी, बड़वारा-1 एवं 2, विलायकला, टिकरिया, लगभग 8 लाख का व्यय अनुमानित हैं। संस्था ने अभी तक बंदरी, भदौरा, टिकरिया, एवं पौंडी 4 केन्द्रों में [illegible]

शारदा मंदिर प्रबंधन समिति को एमजेवीएस व एसबीआई ने दी कचरा गाड़ी

कटनी, देशबन्धु। मानव जीवन विकास समिति एवं एसबीआई बैंक द्वारा देवी जी धाम में शारदा प्रबन्धक समिति को दो कचरा दान गाड़ी दान में दी गई। इस मौके पर मानव जीवन विकास समिति के सचिव निर्भय सिंह, एकता परिषद के वरिष्ठ साथी संतोष सिंह, अभय कुमार, चंद्रपाल के साथ कटनी बैंक के प्रबन्धक दीपक सिन्हा, स्थानीय प्रबन्धक नीलू तिवारी व माँ शारदा प्रबन्धक समिति के प्रशासक व एसडीएम धर्मेंद्र मिश्रा भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्य समिति सदस्य श्रीकांत चतुर्वेदी, माँ शारदा शक्तिपीठ के पुजारी सुमित महाराज, पूर्व पार्षद प्रमोद सिंह, शारदा प्रबन्धक समिति के उपयंत्री एसबी सिंह व समस्त कर्मचारी के साथ साथ स्थानीय नागरिक भी मौजूद रहे।

एसबीआई बैंक के प्रबन्धक द्वारा कचरा गाड़ी की चाबी मन्दिर प्रशासक को सौंपकर पूजा अर्चन किया गया। निश्चय ही यह सराहनीय कार्य है जिसके लिए एसबीआई बैंक धन्यवाद की पात्र है।

इस मौके पर स्थानीय जगह विशेष साफ सफाई पर भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्रीकांत चतुर्वेदी ने कहा कि सफाई पर किसी भी प्रकार की कोई कमी न हो सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जावे एवं एसबीआई बैंक के प्रबन्धक द्वारा अन्य व्यवस्थाओं को मुहैया कराने की बात कही गई।

मानव जीवन विकास समिति ने चलाया हर घर तिरंगा अभियान

एकमत समाचार, कटनी। मानव जीवन विकास समिति, बिजौरी बड़वारा जिला कटनी द्वारा बड़वारा ब्लॉक की 21 पंचायत के 50 गांवों में निर्भय सिंह समिति सचिव की अगुवाई में आजादी का अमृत महोत्सव मनाने हर घर तिरंगा अभियान का आयोजन समिति कर रही है [illegible]

दैनिक भास्कर

दमोह आसपास

खेती के साथ वन उपज बनी आय का जरीया

वन क्षेत्र के गांवों में रहने वालों को किया जा रहा जागरूक

भास्कर न्यूज़। तेंदूखेड़ा

ब्लॉक के वनांचल में बसे गांवों के लिए आजीविका के लिए विभिन्न उपाय कर रहे है। वह खेती के साथ ही वनांचल उपज का संकलन कर उसे बाजार में बेंच कर आर्थिक स्थिति सुधारने का भी प्रयास कर रहे है। कहां जाए तो वनांचल वासियों के लिए उनकी आय का जरिया खेती के अलावा जंगल में लगे पेड़ों में उगने वाले फल भी बने हुए है। फलों का महत्व समझकर उनका संकलन कर बाजार में बेंच रहे है। इस कार्य लिए एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति के सदस्य भी वनांचल वासियों को जागरूक कर प्रेरित करते हुए उनकी मदद भी कर रहे है। समिति के घनश्याम प्रसाद रायकवार बताते हैं कि वनांचल क्षेत्र में रहने वाले ग्रामीण मौसम अनुसार हर्र, बहेड़ा, आंवला के साथ बेल का संकलन कर आय का जरिया अपना रहे है। जिससे वनांचल गांव में निवास करने वाले लोगों की उनकी आर्थिक स्थिति सुधरने के साथ ही दैनिक खर्च के अनुसार परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सकारात्मक बदलाव देखने के लिए मिल रहा है। लेकिन सरकार द्वारा वन उपज संकलन करने वाले लोगों के लिए वन उपज नहीं खरीदने के कारण वन वासियों को संकलन की गई फसल को कम दामों में बिचौलियों को बेचना पड़ रही हा। जिससे वनवासी अच्छी आय से वंचित है। यदि इस उपज को सरकार खरीदने लगे तो लोगों की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार होगा और गांव भी विकसित होगा। ग्राम सरसैला माल, ग्राम पंचायत बोरिया के गुड्डू सींग गौड़, अनीता बाई गौड़, नन्हेवीर सींग गौड़, रतनसींग गौड़, अर्चना बाई गौड़, गुड्डा सींग गौड़ सहित अन्य वनांचल वासी इसी तरह अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

रेंजर ने वन समिति सदस्यों से चर्चा कर योजनाओं की दी जानकारी

फतेहपुर। हटा वन परिक्षेत्र की खड़ेरी बीट में ग्राम वन समिति जलना में तेंदूपत्ता संग्रहण संबंधी बैठक आयोजित की गई। जिसमें शामिल हुए हटा रेंजर ऋषि तिवारी ने तेंदूपत्ता संग्राहकों से शासन वन विभाग की विभिन्न योजना के संबंध में चर्चा की। रेंजर द्वारा वन विभाग से मिलने वाली सामग्री और लाभांश के बारे में विस्तार से बताया गया और विभागीय योजनाओं का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। साथ ही बताया कि तेंदूपत्ता संग्राहकों को बोनस की राशि मिल सके। तेंदूपत्ता संग्राहकों एवं उनके परिवारों को शासन की योजनाओं का लाभ मिल सके। तेंदूपत्ते की चोरी को रोका जा सके, जिसके लिए सतत निगरानी बरती जाए। जिससे किसी तरह की लापरवाही न हो आदि बातों के लिए बताया। इस दौरान बीट प्रभारी आरके राय, कर्मचारी सहित तेंदूपत्ता संग्राहक मौजूद रहे।

नाले का पानी बेकार न बहे, किसानों ने बोरियों से रोका, अब सिंचाई के आएगा काम

ग्रामीण बोले-नाला में पानी रुकने से रबी सीजन में भरपूर मिलेगा पानी

भास्कर न्यूज़। तेंदूखेड़ा

एक तरफ शासन-प्रशासन वर्षा जल को संरक्षित करने के लिए लगातार प्रयासरत है और इसके तहत बरसाती नदी, नालों में स्टाप डेम भी बनाए जा रहे हैं, ताकि वर्षाजल को रोका जा सकें, तो वहीं दूसरी ओर ब्लाक के ऐसे कई गांव है जहां से गुजरे बरसाती नदी, नालों में अभी भी व्यर्थ पानी बह रहा है। जिसे रोकने के लिए प्रशासन द्वारा उचित प्रयास नहीं किए गए है। इससे किसानों को सिंचाई के साथ ही अन्य जरूरतों के लिए पानी का संकट गहराने के आसार नजर आने लगे हैं। ब्लाक तेंदूखेड़ा मुख्यालय से 10 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत बगदरी के आश्रित गाव गुबरा के किसानों के लिए फसल की सिंचाई करने के लिए कोई जल संसाधन नहीं है। गांव किसान अधिक बरसाती नदी, नालों पर निर्भर है। ग्रामीणों ने बताया कि हमलोगों की मुख्य आय का जरिया खेती है। चूंकि सिंचाई के लिए जल संसाधन का अभाव है। इसलिए अच्छी पैदावार नहीं होती है। इस कारण यहां के किसान संपन्न नहीं हैं। यदि बारिश अच्छी हो जाती है तो धान की खेती हो जाती है और गेहूं के लिए सिंचाई के लिए जंगली नालों के पानी पर निर्भर रहते हैं। जंगली नालो से पानी मिल जाये तो यही बहुत बड़ी बात है। हम लोग गेहूं की बोवनी भगवान भरोसे करते हैं।

रबी सीजन में हर उम्मीद होती है कि कभी तो बादल बरसेंगे और गेहूं की फसल में जान आ जाएगी। हमारा गांव आदिवासी बाहुल्य हैं। शिक्षा का स्तर भी खास नहीं है। इसलिए खेती करने के तरीकों में आधुनिकता नहीं आ पाई है। कई बार जंगली नालों का पानी सहेजने के लिए स्टाप डेम बनाने की मांग की पर कोई सुनवाई नहीं हुई है। जन प्रतिनिधि चुनाव के समय नजर आते हैं और कई वादे करते हैं, लेकिन इसके बाद कोई नहीं आता है।

पानी की समस्या से मिलेगी निजात

ग्रामीणों ने बताया कि नालों में भरे पानी को रोकने के लिए इस बार मानव विकास समिति कटनी जिला दमोह के पंचायत सहायक कार्यकर्ता धन सिंह लोधी, रमेश सिंग गौड़ के साथ मिलकर श्रमदान कर मड़ईया घाट नाला पर एक बोरी बंधान किया है । जिसमें वह सफल भी हो गए है। स्थानीय गुड्डू सिंग गौड़, राजू, हल्ले, तोते प्रधान के परिश्रम से यह बोरी बंधान सफल रहा है। इससे नाला का पानी रूक गया है। जिससे फसल में सिंचाई के साथ ही उपयोग के लिए भी पानी की सुविधा होगी। समिति जिला समंवयक घनश्याम रैकवार ने बताया कि समिति के सदस्यों के प्रयासों से और ग्रामीणों के सहयोग से यह बोरी बंधान कार्य सफल हुआ है। अब कुछ हद तक पानी की समस्या से निजात मिलेगी।

बैठक में विभिन्न विषयों हुई चर्चा

भास्कर न्यूज़। तेंदूखेड़ा

जनपद पंचायत के सभागार में शनिवार को मानव जीवन विकास समिति कटनी, दमोह द्वारा ब्लॉक स्तरीय कर्मचारियों के साथ बैठक आयोजित की गई। जिसमें घनश्याम प्रसाद रायकवार ने बैठक का उद्देश्य बताते हुए समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के साथ प्राकृतिक खेती, पशुपालन, जल संरक्षण व सरकारी योजनाओं को लेकर समिति कई वर्षों से लोगों को जागरूक कर रही है। समिति सचिव निर्भय सिंह ने कहा कृषि को लाभ का व्यापार कैसे बढ़ाया जाये, जिससे खेती में कम लागत में अधिक उत्पादन के साथ किसानों की आय दोगुनी बढ़ सके। जैविक खाद आदि के बारे में जानकारी दी। डॉ. हरिकांत बिलवार ने पशुपालकों के लिए योजनाओं की जानकारी दी। एलबी दास ने आजीविका के बारे में बताया। जन अभियान परिषद विकासखंड समंवयक अर्गल ने परिषद ग्राम विकास प्रस्फुटन समितियों के बारे में जानकारी दी। चंद्रपाल कुशवाहा ने कहा कि सरकार द्वारा योजनाये संचालित की गई है। जिसका लाभ सभी को उठाना चाहिए। इस दौरान लाल सिंह, धन सिंह, मिलन बाई, मानसी, परमसुख, नरेश मौजूद रहे।

आजीविका आधारित महासम्मेलन का हुआ समापन

लोकोत्तर, दमोह

एकता परिषद मानव जीवन विकास समिति कटनी.दमोह मध्य प्रदेश के द्वारा आजीविका आधारित महासम्मेलन का आयोजन ग्राम पंचायत बमनोदा खदरीहार में किया गया मानव जीवन विकास समिति एकता परिषद पिछले कई वर्षों से वन अधिकार अधिनियम के तहत लोगों की आजीविका खडी हो गाँव में लोगों की कृषि आधारित गैर कृषि आधारित स्थाई आजीविका जल जंगल जमीन जानवर ओर बीज संरक्षण कौशल विकास व सरकार की योजनाओं के माध्यम से समुदाय की स्थाई आजीविका सुनिश्चित करने हेतु प्रयासरत है इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति हेतु एवं बारीकी से इनके बारे में जानने व समझने के लिए आजीविका आधारित महासम्मेलन का आयोजन किया ग्राम पंचायत बमनोदा खदरीहार में किया गया मुख्य अतिथि एकता परिषद के संस्थापक गांधी वादी विचारक श्री डां.राजगोपाल पी. व्ही.(राजा जी) की उपस्तिथि में महासम्मेलन में अनेक ग्रामों से किसान भाईयों ने प्राकृतिक खेती के संबंध में अपने अपने सुझाव रखें ओर बताया कि रसायनिक खेती में अधिक लागत लगती है लेकिन प्राकृतिक खेती में शून्य बजट की खेती होती है. रसायनिक खेती में अधिक लागत आती है यूरोपीय ग्रिमोर डीऐपी तरल खाद खरीदने में इसलिए हम लोग गाय भैंस का पालन कर रहे हैं।

जल, जंगल, जानवर, जमीन व बीज संरक्षण पर कार्यशाला

भास्कर न्यूज़। तेंदूखेड़ा

ब्लाक के ग्राम बमनोदा खदरीहार में मानव जीवन विकास समिति द्वारा जल, जंगल, जानवर, जमीन एवं बीज संरक्षण पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। आजीविका आधारित इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि एकता परिषद के संस्थापक डॉ. राजगोपाल पीवी रहे। कार्यशाला में तेंदूखेड़ा सहित विभिन्न ग्रामों से किसान शामिल हुए। जिन्होंने प्राकृतिक खेती के संबंध में सुझाव रखें और बताया कि रसायनिक खेती में अधिक लागत लगती है, लेकिन प्राकृतिक खेती में शून्य बजट की खेती होती है। गौ मूत्र गोबर के साथ खरपतवार के माध्यम से बर्मी खाद, बर्मी वास, मठास्त्र, अग्नि अस्त्र, घनजीवामृत, ब्रहमस्त्र, तुलास्त्र, फसल फूल वर्धक, हिंगास्त्र, अजोला इत्यादि बनाते हैं और उपयोग करते हैं। साथ ही देशी बीज का उपयोग किसान कर रहे हैं। वन अधिकार कानून से प्राप्त वन भूमि पर नवाचारों के माध्यम से कृषि कार्य किया जा रहा है। खदरीहार बमनोदा में देशी बीज और जैव उत्पाद यूनिट की प्रदर्शनी लगाई गई। अतिथियों ने उक्त प्रदर्शनी का अवलोकन किया एवं कार्य की सराहना की। कार्यक्रम में सांसद प्रतिनिधि नरेंद्र बजाज ने सरकार की योजनाओं के बारे में बताते हुए लाभ लेने की बात कहीं। कार्यक्रम में सांसद प्रतिनिधि रोगी कल्याण समिति दमोह अनुपम सोनी, सुशील गुप्ता, मूरत सींगं लोधी, राजकुमार सिंह सांसद निज सचिव, संतोष भारती, पूर्व विधायक प्रताप सिंह लोधी ने भी कार्यशाला को संबोधित किया। एकता परिषद राष्ट्रीय अध्यक्ष परमार ने कहा कि वन अधिकार कानून के क्रियांवयन में लापरवाही हुई है। सरकार को इस विषय पर गंभीरता से चिंतन मन कर आदिवासियों को उनका हक देना चाहिए। एकता परिषद संस्थापक डॉ. राजगोपाल ने कहा कि वन अधिकार कानून को केंद्र सरकार, राज्य सरकारों ने जिस प्रकार से लागू किया है उसके क्रियांवयन में बड़ी अनदेखी हुई है। सरकार के सामने इस बात को रखा जाएगा। कार्यक्रम में अनीश, निर्भय सिंह, दिनेश खरे, ब्रजेश सहित ग्रामीण क्षेत्रों से किसानों की मौजूदगी रही। संचालन घनश्याम प्रसाद रायकवार ने किया एवं आभार चंद्रपाल कुशवाहा ने व्यक्त किया।

धन्यवाद!

Social Media Linked:

- Email - mjvs@mjvs.org , mjvskatni@gmail.com
- Website- www.mjvs.org
- Blogger - https://mjvskatni.blogspot.com/
- Twitter - https://twitter.com/mjvs_katni_mp
- Facebook - https://www.facebook.com/ngomjvskatni/
- Instagram - https://www.instagram.com/manavjeevanvikassamiti/
- Youtube- https://www.youtube.com/channel/UCiEnoE5h_oePCKrsea7rLWQ
- Linkedin – https://www.linkedin.com/in/manav-jeevan-vikas-samiti-0b7559266